अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

श्री 1008 पद्मप्रभ् दिगम्बर जैन मंदिर, अलवर, स्थित पेंटिंग

वीर निर्वाण संवत् - 2536

जेठ शुक्ल पक्ष वि.सं. 2067 जून 2010

अंक : बारह

वर्ष : चार

मूल्य : 10/-

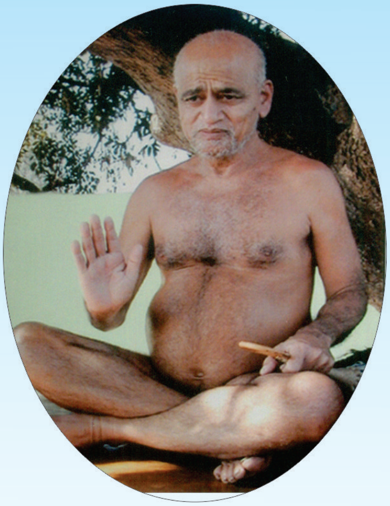

नरम में न रम

अरे ! मन
तू रमना चाहता है
श्रमण में रम
चरम-चमन में रम
सदा-सदा के लिए
परम-नमन में रम

चरम में, चरम सुख कहाँ
इसलिए अब
स्वप्न में भी भूलकर
नरम-नरम में
न....रम ! न.... रम !!

इंडिया गेट, नई दिल्ली से मुनिश्री ससंघ के साथ भक्तगण विहार करते हुए।

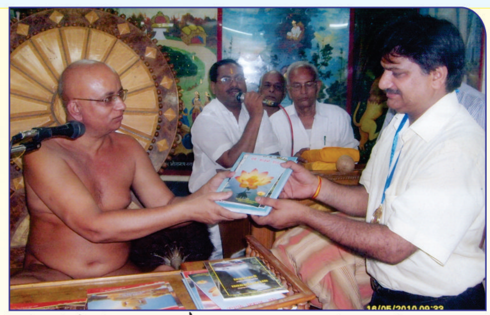

दिल्ली में श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर भाव विज्ञान की सदस्यता स्वीकार करने के उपरांत मुनि श्री से साहित्य प्राप्त करते हुए।

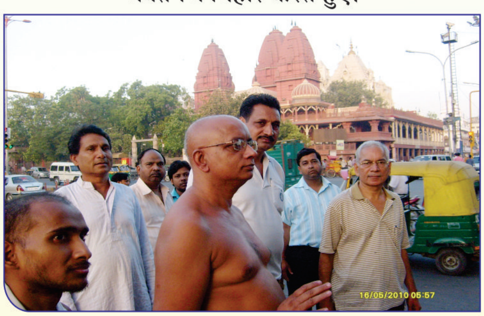

श्री दि. जैन लाल मंदिर, दिल्ली से विहार करते हुए मुनिश्री ससंघ

श्री बसंत जैन, ग्वालियर, भाव विज्ञान के सदस्य बनते हुए।

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री **डॉ. अजित जैन** 94256 01161

संयुक्त सचिव **अरविन्द जैन,** पथरिया दमोह

कोषाध्यक्ष **इंजी. महेन्द्र जैन**

उपाध्यक्ष **राजेश जैन 'रज्जन'** दमोह

अध्यक्ष **डॉ सुधीर जैन** 9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन, श्री महावीर प्रसाद जैन, सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री तरुण सर्राफ, श्री पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री शांतिलाल वागडिया, **भोपाल :** अविनाश जैन, अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक

भाव विज्ञान

(BHAV VIGYAN)

वर्ष-चार
अंक-बारह

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा', भोपाल
फोन : 4221458, 9893930333, 9977557313

● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
F-108/34, शिवाजी नगर, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 94256 01161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं
रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक — **पृष्ठ**

1. अक्षय तृतीया व श्रुतपंचमी आराधना — 2
''सम्पादकीय'' श्रीपाल जैन 'दिवा'
2. ध्यान में आलम्बन क्या? — 5
मुनि आर्जवसागर
3. आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव — 8
डॉ. अजित कुमार जैन
4. जैन दर्शन में काल विषयक अवधारणा — 11
डॉ. संजय जैन
5. अक्षय तृतीया पर्व — 15
संकलन : सुशील पाटनी
6. गणितसार संग्रह — 18
7. सम्यक ध्यान शतक — 22
मुनि आर्जवसागर
8. प्रत्येक आत्मा में भगवान बनने की शक्ति.... — 23
संकलन : सुनील वेजीटेरियन
9. 21 वीं शताब्दी का जैन धर्म — 24
मुज़फ़्फ़र हुसैन, मुम्बई
10. श्रुत पंचमी — 28
संकलन : सुशीला पाटनी
11. सीख दीजिये ताहि को, जाको सीख सुहाय — 30
डॉ. वीरसागर जैन
12. समाचार — 32

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

अक्षय तृतीया व श्रुतपंचमी आराधना

श्रीपाल जैन 'दिवा'

जब राजा ऋषभदेव वर्तमान चौबीसी के और दिगम्बर मुनियों के प्रथम मुनि बने वह क्षण कितना सुखद और विस्मयकारी रहा होगा। तत्कालीन प्रजाजन ने अपने प्रजापति को दिगम्बर वेश में पाकर महावैराग्य का दर्शन कर संसार की असारता की अनुभूति का वेदन किया होगा। आनन्द मिश्रित विस्मय ने जन-जन के नयन-जल से अपने प्रजापति के दिगम्बरत्व का अभिषेक कर अपने को धन्य किया होगा। छः माह के तप ध्यान पश्चात चार हजार राजा जो साथ में मुनिव्रत धारण किये थे उनके कल्याण व परम्परा के निर्वहन हेतु मुनि आदिनाथ आहार चर्या करते हैं नगर की ओर। आहार विधि एवं पड़गाहन विधि के ज्ञान के अभाव के कारण आदिनाथ के आहार नहीं हुआ। जंगल लौट गये। उनके लिये तो जंगल में ही मंगल था। संहनन की अपार शक्ति थी जो संघ के मुनियों में नहीं थी। कुछ कच्चे वैराग्य वाले राजा मुनि बने होंगे। वे घोर संयम तप के ताप को सहन नहीं कर सके। मुनि आदिनाथ उसी अन्तराल के बाद आहार को उठे। योग से राजा श्रेयांस को पूर्व जन्म की स्मृति से दिगम्बर मुनि को आहार विधि एवं पड़गाहन विधि का स्मरण हो आया और उन्होंने विधिवत पड़गाहन कर इक्षुरस का आहार दान दिया। यह दिन अक्षय तृतीया के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मुनि आदिनाथ के प्रथम आहार का मंगल दिवस इतना पवित्र और शुभ माना जाता है कि बिना मुहुर्त शोधे सारे शुभ कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं। इस दिन का पल-पल पवित्र व शुभ माना जाता है। इसे बोलचाल में 'अखातीज' भी बोलते हैं। यह दिन प्रथम दिगम्बर मुनि के प्रथम आहार का महा महोत्सव है। वर्तमान चौबीसी के आदि काल का आहार महोत्सव है जिसमें पड़गाहन विधि एवं आहार विधि की खोज हुई। इसी दिन दिगम्बर मुनि के आहार दान की परम्परा का जन्म हुआ।

भगवान आदिनाथ के बाद चौबीसवें क्रम में तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हुए। उनके समय में हिंसा-हत्या का जबरदस्त बोल बाला था। उस बोल-बाले का महावीर स्वामी ने अपने तप ध्यान और ज्ञान के बल से सामना किया और अहिंसा की जोत जलाई। 'जिओ और जीने दो' का मूलमंत्र संसार को दिया। अहिंसा का डंका बजाया। उनकी वाणी खिरी गौतम गणधर व अन्य गणधरों ने झेली अर्थात श्रवण की। क्षयोपशम के अनुसार स्मृति में रखी। परन्तु इन तीर्थंकर से प्राप्त ज्ञान को तत्काल में लिपिबद्ध नहीं किया गया। भगवान महावीर के ६८३ वर्ष पश्चात् आगम के पारगामी ज्ञाता आचार्य धरसेन जी हुए। उन्हें गिरनार की गुफा में चिंतन करते हुए चिंता हुई कि काल के प्रभाव से स्मरण शक्ति का क्षीण होना स्वाभाविक है। श्रुतज्ञान को विस्मृति के गर्त में जाने से बचाने के लिए श्रुतज्ञान को लिपिबद्ध करने के भाव हुए।

उन्होंने तत्कालीन 'महिमानगरी' में १२००० दिगम्बर मुनियों के महा सम्मेलन जो महसेनाचार्य जी के सानिध्य में हो रहा था एक पत्र भेजा। जिसमें श्रुतज्ञान को देने और उसको लिपिबद्ध कर सुरक्षित करने का भाव व्यक्त था। महसेनाचार्य जी ने अपने संघ के योग्य आज्ञाकारी सेवाभावी एवं समस्त विद्याओं के पारगामी उज्जवल चारित्र के धारी दो मुनियों (पुष्पदन्तजी महाराज एवं भूतबलि जी महाराज) को धरसेनाचार्य जी के पास श्रुतज्ञान प्राप्त करने एवं लिपिबद्ध करने हेतु सहर्ष भेजा। दोनों ने जाकर आचार्य धरसेन जी को विनम्रता पूर्वक नमस्कार किया ज्ञान दान की प्रार्थना की। आचार्य जी ने आशीर्वाद देकर दो तीन दिन में दोनों मुनियों को बुद्धि शक्ति और सहनशीलता आदि गुणों की परीक्षा ली। वे दोनों अत्यंत योग्य थे। अर्थात धरसेनाचार्य जी, जो अष्टांग महानिमित्त के परगामी और लिपिशास्त्र के ज्ञाता थे, ने वात्सल्य पूर्वक दोनों मुनियों को श्रुतोपदेश दिया जो अषाढ़ शुक्ल एकादशी को समाप्त हुआ। दोनों मुनियों ने महसेनाचार्य जी के संघ में वापस आकर 'षट्खण्डागम' नाम के सिद्धान्त ग्रंथ की रचना की। लेखन का यह महान कार्य ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी तिथि को सम्पन्न हुआ। इसी दिन षट्खण्डागम ग्रंथ की पूजा की गई। इस तिथि को इसीलिए 'श्रुत पंचमी' के नाम से जाना जाने लगा। इस दिन प्रति वर्ष शास्त्रों की विशेष पूजा अर्चना की जाती है। ग्रंथों की साल संभाल की जाती है। उनकी सुरक्षा के उपाये किये जाते हैं।

आचार्य धरसेन जी के समकालीन आचार्य गुणधर जी भी श्रुतज्ञान परम्परा को लिपिबद्ध करने की चिन्ता से चिन्तित थे। उन्होने महिमानगरी में 'कषायपाहुड़' नामक महान सिद्धान्त ग्रंथ प्राकृत भाषा में लिखा। इस आधार से श्रुत पंचमी को 'प्राकृत दिवस' के रूप में भी मनाया जाता है। यह भी शुभ शुरूआत है। श्रुत पंचमी या प्राकृत दिवस मनाना तभी सार्थक है जब हम श्रुतज्ञान का स्वाध्याय करें। स्वाध्याय को परम तप कहा गया है। यहाँ तक कहा है कि श्रुत पंचमी भव्य जीवों के लिए मोक्ष का द्वार है। ऐसे ही वर्तमान के धरसेनाचार्य जी एवं महसेनाचार्य जी वर्तमान के महावीर जी परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी हैं। जिनकी नजर में ऐसा ग्रन्थ आया जिसमें भगवती आराधना, विजयोदया टीका, मूलाचार, सन्मति सूत्र, हरिवंशपुराण, बृहत्कथाकोश, कषायपाहुड़, षट्खण्डागम आदि अनेक दिगम्बर ग्रन्थों को यापनीय ग्रन्थ सिद्ध करने का प्रयास किया है। समस्त श्वेताम्बर साधु एवं विद्वानों ने दिगम्बर मत को ही छद्मस्थप्रणीत बतला दिया है। इसी का समर्थन पोषण डॉ. सागरमल जी ने किया है। बल्कि सागरमल जी ने सम्पूर्ण दिगम्बर मत के इतिहास में उलटफेर करने की घोर कुचेष्टा कर डाली है। अन्य मतावलम्बियों को कौन बताये कि असलियत क्या है? इसकी घोर चिंता आचार्य श्री विद्यासागर जी को हुई और उन्होंने विद्वानों के समक्ष इस विकट समस्या को रखा और समाधान की चुनौती को स्वीकार करने की पहल की। सभी ने डॉ. रतनचन्द्र जैन, भोपाल का नाम आगे रखा आचार्य श्री ने उन्हें आशीर्वाद दिया और भरपूर मार्गदर्शन दिया। जैसे धरसेनाचार्य जी को चिंता हुई थी ऐसी चिन्ता आचार्य विद्यासागर जी को हुई। धरसेनाचार्य जी को पुष्पदन्तजी एवं भूतबलिजी महाराज मिले वैसे ही एक परम मुनिभक्त विद्वान,

साहसी, दो टूक बात कहने वाले भाई डॉ. रतनचन्द्र जी आचार्य विद्यासागर जी को मिले और उन्होंने सम्पूर्ण ग्रन्थों का आलोड़न-विलोड़न कर घोर असत्य का अपने ज्ञान बाण से भण्डाफोड़ किया। असत्य का खण्डन सत्य का मण्डन करने में निष्णात डॉ. रतनचन्द्र जी का वर्तमान में सानी नहीं है उन्होंने लगभग २६०० पृष्ठों में तीन खण्डों में 'जैन परम्परा और यापनीय संघ' के नाम से ग्रन्थ लिख डाला। इस कार्य को सम्पन्न करने में उन्हें लगभग दस वर्ष का समय लग गया। तन में शुगर की घातक बीमारी को भी उन्होंने जैसे तन से अलग करके रख दिया था। उसकी कतई परवाह नहीं की और इच्छा शक्ति, आत्म बल एवं आचार्य श्री विद्यासागर जी, एवं समस्त संघस्थ साधुओं के आशीष सहयोग के बल पर कठिन कार्य को भी भक्ति भाव से सम्पूर्ण कर डाला। यह कार्य दिगम्बर धर्म के इतिहास की रक्षा का कार्य है, दिगम्बर ग्रन्थों की पवित्र मान्यताओं की सुरक्षा का कार्य है। उनमें मुनि श्री पुष्पदन्त जी और भूतबलि जी जैसे कठोर निश्चय और श्रम की झलक दिखाई देती है। उनकी श्रद्धा-भक्ति, ज्ञान-ध्यान और दिगम्बर धर्म की रक्षा का उत्कट भाव समादरणीय है अनुकरणीय है। वे चिरायु हों। यह अक्षय तृतीया श्रुताराधना पूर्वक सब जीवों को अक्षय पद प्रदान कराये।

।। इत्यलं ।।

उपलब्ध है महान ग्रंथ

संत शिरोमणी परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के तत्त्वावधान में प्रो. रतनचन्द्र जैन, भोपाल, म.प्र. के द्वारा दस वर्षों के अनवरत परिश्रम से लिखित, तीन खण्डों एवं 2600 पृष्ठों में समाया चिरप्रतीक्षित ग्रन्थ : ''जैनपरम्परा और यापनीयसंघ''

प्रत्येक खण्ड 500/- रू.

- इसमें हैं दिगम्बर जैन परम्परा की प्रागैतिहासिकता, आचार्य कुन्दकुन्द की ईसापूर्व प्रथम शती में अवस्थिति एवं षट्खण्डागम आदि जिन 18 दिगम्बर जैन ग्रन्थों को यापनीयग्रन्थ बतलाया गया है, उनके दिगम्बराचार्यकृत होने के अखण्ड्य प्रमाणों का प्रस्तुतीकरण।
- अनेक आक्षेपों का निरसन, अनेक नवीन तथ्यों का उद्घाटन।
- शोधार्थियों के लिये तथा जैन संघों के प्रामाणिक इतिहास एवं सिद्धान्तों के जिज्ञासुओं के लिए अत्यंत उपादेय। प्रत्येक जैन मन्दिर, जैन-शिक्षण संस्थान, महाविद्यालयों और देश-विदेश के विश्वविद्यालयों तथा शोध संस्थानों में संग्रहणीय।

प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान : सर्वोदय जैन विद्यापीठ

1/205, प्रोफेसर कालोनी, आगरा-282002, फोन : 0562-2852278, मोबाईल : 9412264445

प्रवचन

ध्यान में आलम्बन क्या?

मुनि आर्जवसागर

अनादि काल से संसारी जीव का कौन सा ध्यान चल रहा है ? तो आर्त्त, रौद्र ध्यान चल रहा है। बहिर् विषय कषायों की ओर जो ध्यान है वह आर्त्त रौद्र ध्यान ही तो है। उसमें हमारी ऊर्जा बाहर की ओर जाती है और धर्म शुक्ल ध्यान में ऊर्जा अन्तस् की ओर प्रवाहित होती है। इस कारण हमें मोक्ष के कारण रूप ध्यानों का आलम्बन अवश्य लेना चाहिए और संसार के कारण रूप ध्यानों को छोड़ देना चाहिए वे हेय हैं और धर्म शुक्ल ध्यान उपादेय हैं और मोक्ष के कारण हैं। हमारा ध्यान मूल में चार भेद रूप है -

''आर्त्त रौद्र धर्म्यशुक्लानि'' ।।28।। (त.सू.)

तत्त्वार्थ सूत्र में कहा है कि ध्यान चार प्रकार के हैं आर्त्त ध्यान, रौद्र ध्यान, धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान। इनमें से ''परे मोक्ष हेतु'' ।।29।। अन्त के दो ध्यान मोक्ष के कारण हैं। और एक सूत्र हमने बना लिया है कि - ''अपरे संसार हेतु''।। बाकी पहले के दो ध्यान संसार के कारण हैं। आर्त्त ध्यान के चार भेद हैं - 1. इष्ट वियोग, 2. अनिष्ट संयोग, 3. पीड़ा चिंतन, 4. निदान। रौद्र ध्यान के भी चार भेद हैं - 1. हिंसानन्दि 2. मृषानन्दि 3. चौर्यानन्दि, 4. परिग्रहानन्दि।

धर्म ध्यान के चार भेद कौन से हैं? तो - 1. आज्ञा विचय 2. अपाय विचय 3. विपाक विचय और 4. संस्थान विचय तथा शुक्ल ध्यान के चार भेद कौन से हैं? तो 1. पृथक्त्ववितर्क वीचार, 2. एकत्ववितर्क अवीचार, 3. सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति, 4. व्युपरतक्रिया निवृत्ति। शुभचन्द्र आचार्य द्वारा रचित ध्यान का एक महान ग्रन्थ ज्ञानार्णव है जिसमें धर्म ध्यान के दस भेद भी बताए हैं। और मुनियों को होने वाले ध्यानों में धारणाएं भी वर्णित हैं। उसमें पृथ्वीधारणा, अग्निधारणा, वायुधारणा, जलधारणा, और तत्त्वधारणा ऐसी धारणाओं का भी वर्णन ध्यानान्तर्गत किया गया है। इन सब ध्यानों को हम आगे समझेंगे। हमें अशुभ ध्यानों से बचना चाहिए। वे रांग साईड के समान हैं। वे हमारी आत्मा को बहिरात्मा बनाते हैं। जग के दुक्खों में भटकाते हैं, हमारे ध्यानों को वे अशुभ बनाते हैं इसलिए हम मन को सम्हालें। मन की सम्हाल ही सबसे बड़ी सम्हाल है। मन एक बन्दर के समान है। बहुत उछल, कूद मचाता है। पूरे-पूरे धर्म के बगीचे को नष्ट कर देता है। इसलिए उस मन को श्रुत रूपी वृक्ष पर चढ़ाओ ऐसा गुणभद्र आचार्य आत्मानुशासन में कहते हैं। एक ही पेड़ में रम करके सारे बगीचे को नष्ट नहीं कर पायेगा। यह मन भी संसार में सब जगह भाग रहा है, सभी असीमित विषयों में भाग करके अपनी आत्मा में राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, परिग्रह इनके माध्यम से आस्रव व बंध करा रहा है। अतः ऐसे मन को अवश्य सम्हालें। जैसे अगर बच्चा शरारत करता है जो कुछ भी उठाता है, उसे खराब कर देता है अतः उसको अच्छे से अच्छा एक खिलौना पकड़ा देते हैं जिसमें वह रमा रहे बस वैसे ही जिसका मन बहुत भटकता है बहुत शरारत करता है तो

आचार्यों ने कहा है कि लो तुमको धर्म का खिलौना दे देते हैं। ये धर्म क्रियाओं का खिलौना जिसे मिल गया उसमें ही मन को जो रमायेगा तो यह मन धर्म की हानि या पापास्रव न करता हुआ, आत्मा को कुछ पुण्य लाभ भी प्रदान करायेगा जैसे अगर छोटे बच्चे को खिलौना नहीं पकड़ाते हैं तो वह शोर मचाता है या रुदन मचाता है क्योंकि बच्चा बड़ों जैसा बहुत देर तक एक आसन में शान्त नहीं बैठ सकता। उसे कुछ न कुछ क्रीड़ा करने की वस्तुएँ चाहिए। यह बात भी सर्व विदित है ही कि बच्चे खेल खेलते-खेलते ही बड़े होते हैं चाहे तीर्थंकर भी क्यों न हों। इसी तरह मन को भी प्राथमिक अवस्था में कोई न कोई विषय चाहिए अगर संसारी व्यक्ति के पञ्चेन्द्रिय विषय छूट जाते हैं तो उसका मन मचलने लग जाता है क्योंकि प्रथम अवस्था में मन को शून्य पर नहीं टिकाया जा सकता। अगर उस मन को विषयों से मोड़कर धार्मिक विषयों में, षट् आवश्यकों में या तत्त्व चिन्तन में लगाते हैं तो फिर उसी में रम जाता है, बस इतना जानना आवश्यक है कि उसे धर्म विषय की महिमा को जानकर उत्तम लक्ष्यानुसार उसमें सुरुचि जगाना चाहिए तभी मन पर विजय पाकर सम्यक् ध्यान सम्भव होगा। बच्चों को स्कूल में खिलौने में ही सब सिखाया जाता है, पढ़ाया जाता है, गिनती सिखायी जाती है, एक स्लेट देखी थी मैंने, उसमें आधे तरफ तो लिखने का स्थान था और आधे तरफ गिनने के गुरियाँ लगे थे। रंगीन-रंगीन गुरियाँ जो लगी हुयी थी उनमें से एक-एक को खिसकाते हुए एक, दो की गिनती बच्चे सीखते थे। हमने कहा बहुत अच्छा सिस्टम है खेल भी रहे हैं और सीख भी रहे हैं। एक-एक खिलौने के माध्यम से सबक सिखाया जाता है। वैसे ही हमारी आत्मा के बारे में सीखने के लिए आचार्यों ने व्यवस्था की है। चलो सीखो आत्मा में उतरने का खेल सीखो, कैसे सीखेंगे ? तो चलो लेलो हाथ में चावल और सोचो देखो ये चावल कितने सफेद हैं ये शुक्ल लेश्या का प्रतीक है। ऐसा धवल हमको बनना है। जिस धान के ऊपर छिलका था वह उतर गया छिलका उतारना परिग्रह त्याग का प्रतीक है। लालिमा गयी यह कषाय त्याग का प्रतीक है और पुनः इसको भूमि में बोयेंगे तो उत्पन्न नहीं होगा यह अक्षय पद का प्रतीक है। ऐसे निर्ग्रन्थ, निष्कषाय और जन्म नहीं लेने वाले चावल को चढ़ायेंगे तो हम भी परिग्रह से रहित, कषायों से रहित, शुक्ल लेश्या प्राप्त करते हुए एक दिन अक्षय बन जायेंगे सिद्ध भगवान बन जायेंगे। इसलिए इसको वीतराग प्रभु के या निर्ग्रन्थ गुरु के चरणों में चढ़ाया जाता है। ना कि सरागी देवी, देवताओं के चरणों में चढ़ाया जाता है ना कि कोई परिग्रही के चरणों में चढ़ाया जाता है। क्योंकि यह निर्ग्रन्थपने का द्योतक है न कि सरागी का। और वीतराग बनने का सन्देश दे रहा है। हमको खिलौना देकर आचार्य कह रहे हैं कि सीखो निर्ग्रन्थ बनने का सन्देश। जल चढ़ाओगे तो सीखो जन्म, जरा, मृत्यु नाश हो जाय। अगर चन्दन चढ़ाओगे तो सीखो यह संसार का ताप नष्ट हो जाय। एक-एक द्रव्य चढ़ाते समय एक-एक भावनायें आपको सिखायी गयीं हैं। इन भावनाओं से आप इन पदार्थों के माध्यम से वह भावना अपने अन्दर साकार करो और ये खिलौने आपको एक दिन भगवान बना देंगे। आपको धर्म की शिक्षा देकर के आपको परमात्मा बना देंगे। आपको मन्दिर मिला है, और मन्दिर में जाप, शास्त्र, पूजा की सामग्री और भगवान सब कुछ मिले हैं। ये ही सामग्रियाँ आपको आत्मा में रमाती

हैं व रमायेंगी। हमें विषयों से छुड़ाती हैं और हमको संसार याद नहीं आता और हम मस्त हो जाते हैं धर्म के कार्य में। ऐसे शुभ और शुद्ध भाव की ओर ले जाने वाले ये पवित्र साधन हैं। पहली क्लास में ऐसा ही सिखाया जाता है फिर आगे की क्लास में धीरे-धीरे खिलौने छूटते चले जाते हैं फिर छुट्टी के समय ही खेलना होता है। आप सच्चे श्रावक, ऐलक, क्षुल्लक बन जायेंगे तो ये अष्ट द्रव्य के खिलौने नहीं मिलेंगे फिर आपके खिलौने शास्त्र, माला आदि ही रहेंगे। इससे ही धर्म ध्यान करो अपने मन को प्रशस्त करो, पिच्छी से अहिंसा पालन करो आदि। आप और आगे बढ़ जायेंगे भगवान अर्हन्त प्रभु बन जायेंगे तब तुम्हारे पास शास्त्र आदि नहीं रहेंगे, सब कुछ छूट जायेंगे। बस अब तो शरीर मात्र बचा रहेगा। वे तो अपनी आत्मा में लीन रहते हैं उनको कोई इच्छा नहीं है फिर भी शरीर चलता रहता है, शरीर से उनको कोई काम नहीं है। लेकिन अपने लिए काम का है उससे हम पूजा, अभिषेक करते हैं, दिव्यध्वनि सुनते हैं, प्रभु का दर्शन करते हैं इत्यादि। वह शरीर रूपी खिलौना जब अपने काम का नहीं रहता वह भी जब छूट जाता है तब सिद्ध परमेष्ठी बन जाते हैं। वहाँ न दिव्यध्वनि आदि होती है अर्थात् सब कुछ यहीं छूट जाता है। अर्थात् इस संसार में लोगों का मन लगाने के लिए ये सब सुविधायें मिली हुई हैं लेकिन राग, द्वेष करने के लिए नहीं। इन संसार के पदार्थों को देखें जानें, समझे लेकिन राग, द्वेष न करें। राग, द्वेष करेंगे तो कर्मों से बंधेंगे। ये सारा दृश्य हमारे सामने दिख रहा है लेकिन यह मेरा है, मैं इस रूप में हूँ, नष्ट हुआ तो मेरा बहुत कुछ नष्ट हो गया, क्रोधादि कषायें करने लगे तो कर्मों का आस्रव हो जाता है, संसार के पदार्थों को रहने दो लेकिन इसको अपना मत समझो, फिर कैसा समझो तो कहा है आचार्यों ने :-

अचेतनमिदं दृश्यं, मदृश्यं चेतनं तथा।
कोरुष्यामि पतुष्यामि, माध्यस्थोहंभवामि तत् ।।

इदं दृश्यम् अचेतनं - जो यह दृश्य देखने में आ गया है ये सब अचेतन है यह जो शरीर देखने में आ रहा है वह अचेतन है। अदृश्य चेतनं तथा - चेतन देखने में नहीं आता। कोरुष्यामि पतुष्यामि - किस में राग करूँ, किस में द्वेष करूँ जो दिख रहा है वह अचेतन है और जो देख रहा है वह चेतन है इसका उसका सम्बन्ध नहीं हैं। किसको अपना समझूँ। किसको पराया समझूँ माध्यस्थोहं भवामि तत् - इन सभी में मैं माध्यस्थ होता हूँ। सांसारिक पदार्थों में माध्यस्थ रहो इन्हें न अच्छा-न बुरा, न अपना-न पराया समझो। जो है वह मेरा नहीं है गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज मूकमाटी में कहते हैं कि -

''बाहर ये जो कुछ दिख रहा है सो मैं नहीं हूँ और मेरा भी नहीं है, ये आँखे मुझे देख नहीं सकती, मैं सभी का दृष्टा हूँ, मैं स्वयं का सृष्टा हूँ। बाहर ये जो कुछ दिख रहा है सो मैं नहीं हूँ और मेरा भी नहीं है'' । ऐसा ही ध्यान पावन है शान्ति व संतोष का कारण है।

॥ भगवान महावीर की जय ॥

आर्थिक विकास, उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का अहिंसात्मक श्रेष्ठ जीवन शैली पर प्रभाव

डॉ. अजित कुमार जैन

गतांक से आगे ....

वास्तव में 1991 के आर्थिक उदारीकरण एवं वैश्वीकरण ने आम परम्परागत परिवारों के उपभोग संबंधी रवैये एवं जीवन शैली में मूलभूत परिवर्तन ला दिया है। आत्मसंयम और पैसा बचाने की परम्परागत सोच अब निरर्थक हो रही है। पश्चिम का अन्धानुकरण करते हुए हमारे रहन–सहन व खान–पान में भारी तब्दीली आ गई है। **योग व ध्यान पश्चिम के बहुत से देशों में लोकप्रिय होते जा रहे हैं। वे शरीर को स्वस्थ रखनेके लिए भारतीय योग, ध्यान, प्राकृतिक चिकित्सा तथा जड़ी बूटियों से बनी आयुर्वेदिक दवाईयाँ, च्यवनप्राश, ईसबगोल, नीम से बने पदार्थों का उपयोग करने लगे हैं।**

परिवारों में अचानक फिटनेस सेंटर जाने, बेहतर दिखने एवं बेहतर महसूस करने के उपायों को अपनाने में खर्च बढ़ गया है। **बेहतर दिखने की चाहत से वर्तमान में सौंदर्य प्रसाधन का कारोबार भारत में लगभग 1000 करोड़ रुपये से भी अधिक का हो गया है।**

अहिंसात्मक आचार विचार की वैज्ञानिकता एक संस्कृति का मूल आधार है। संस्कृति वह जीवन शैली है जो अहिंसात्मक आचार विचार की वैज्ञानिकता से विकसित हुई है। जियो और जीने दो इस वैज्ञानिकता का प्रमुख तत्त्व है।

सौंदर्य प्रसाधन के अंतर्गत सामान्यतः उपलब्ध लिपिस्टिक, चैपिस्टिक, माइश्चराइजर में मुर्दा जानवरों का मांस, खून तथा खतरनाक रसायनों एवं कृत्रिम या सिंथेटिक खुशबुओं एवं रंगों का मिश्रण होता है। परफ्यूम्स में ज्यादातर सुअर की चर्बी का बेस तेल होता है तथा मस्क पशुओं (हिरण, बिल्ली एवं मस्करेट्स) को मारकर प्राप्त किया जाता है। नहाने के साबुन में गाय व सुअर इत्यादि पशुओं की चर्बी मिली होती है जो कि स्वास्थ्य एवं त्वचा के लिये हानिकारक होती है। त्वचा के करोड़ों रोम छिद्रों में चर्बी अपने गुणों के अनुरूप ठन्डी होकर जम जाती है। रोम छिद्र बन्द होने से कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं और त्वचा शुष्क तथा धारीदार बन जाती है।

कुछ भारतीय निर्माताओं द्वारा आयुर्वेदिक उत्पादों में हरा निशान लगाकर **अहिंसक** उत्पादों का निर्माण कर विक्रय किया जाता है जैसे बेजीटेबल स्टीयरिक एसिड, वैक्स, मिट्टी, नीम, एलोवेरा, रोज़मेरी, केंडिलिला, गेंदा, गुड़हल, गुलाब, सूर्यमुखी, स्ट्राबेरी, सन्तरा, नारियल, खरबूजा, बादाम, तरबूज, जेतून, सिंथेटिक एवं लवण। विकल्प के रूप में कुछ कम्पनियों द्वारा निर्मित उच्च क्वालिटी के तेल के साबुन जैसे

नीम (स्वास्तिक कम्पनी) मार्गो (विप्रो कम्पनी), मैसूर सन्दल (कर्नाटक गवर्नमेंट सोप फैक्टरी), निरमा, मेडीमिक्स आदि को दैनिक उपयोग में लाया जा सकता है। रासायनिक सौंदर्य प्रसाधन के स्थान पर जड़ी-बूटी का फेस पैक घर पर ही निम्नानुसार तैयार किया जा सकता है:-

जड़ी-बूटी का फैस पैक का 100 ग्राम पावडर बनाने केलिये आवश्यक सामग्री : बड़ी इलाचयी और जटामांसी 2.5-2.5 ग्राम, मुलैठी व खस और सहिजना की छाल 5-5 ग्राम, नागर मोठा समुद्रफेन सिरसछाल की छाल, तगर, रक्तचंदन, दारूलहल्दी और कूठ 7.5-7.5 ग्राम, सुगंध बाला व गंध कोकिला 10-10 ग्राम।

विधि : सभी को लेकर कूटकर व पीसकर मिला लेवें तथा छानकर रखें । स्नान से 5 मिनट पूर्व चेहरा और गर्दन पर इसका लेप लगाकर सौंदर्य में वृद्धि की जा सकती है। बाजार में इस प्रकार के रेडीमेड आयुर्वेदिक लेप भी उपलब्ध हैं।

अन्य प्रकार के निम्न अहिंसक सौंदर्य प्रसाधन घर पर ही तैयार किये जा सकते हैं-
साँवली त्वचा के लिये - पपीता का गूदा एवं पेस्ट ।
रूखी त्वचा के लिये - केला, दूध, नीबू का पेस्ट ।
मुहांसों वाली त्वचा के लिये - केला, अमरूद का पेस्ट।
रूसी त्वचा - सेव का रस अथवा पेस्ट ।
ग्लो त्वचा - सन्तरे के छिलके का पावडर एवं सन्तरे के रस का पेस्ट।

गर्मी के मौसम में पित्त बढ़ता है तथा त्वचा के सौंदर्य को नुकसान पहुँचाता है। अतः गर्मी के मौसम में पित्त को बढ़ने से रोकने के लिए अनेक निम्न उपाय सुझाए गए है :-

1. दूध के साथ अलमोन्ड मील तथा गुलाब जल मिलाने से अच्छा क्लीनीजर बनता है एवं गर्मी के मौसम में त्वचा की सुरक्षा करता है।
2. एक अच्छा क्लीनजिंग मिक्स बनाने के लिए अलमोन्ड मील, ओटमील, मिल्क एवं गुलाबजल को मिलाकर साधारण त्वचा हेतु उपयोग किया जा सकता है।
3. तैलीय त्वचा हेतु ओटमील या चीकपी फ्लोर, नींबू नीम पाउडर के साथ उपयोग किया जा सकता है।
4. घरेलू फेस मास्क बनाने के लिए फल एवं सब्जी का जैसे चँदन, पपीता, टमाटर, ककड़ी (खीरा) ब्राह्मी, आँवला, हल्दी, नींबू (तैलीय त्वचा हेतु), गुलाबजल को मिलावें। सूखी एवं रुखी त्वचा हेतु लगावें एवं 15-20 मिनट पश्चात धो लेवें।
5. लाल चँदन एवं गुलाबजल का उपयोग तेजधूप से त्वचा को बचाने के लिए किया जा सकता है।

6. गर्मी के दिनों में शीतलजल एवं गुलाबजल से आँखों को धोकर स्वस्थ किया जा सकत है। रूई के फोहे में गुलाबजल डालकर बन्द आँखों की पलकों पर रखकर फायदा लिया जा सकता है।
7. ज्यादा पानी पीकर भी सौंदर्य की वृद्धि की जा सकती है।
8. दूध पीने से भी गर्मी में ठंडक होती है।
9. सन्तोषजनक नींद (रात को शीघ्र सोना एवं सुबह शीघ्र जागना) पूर्ण होने से सौंदर्य में वृद्धि होती है।

टूथपेस्ट : अधिकतर निर्माताओं के **टूथपेस्ट में डाइकेल्शियम फास्फेट के रूप में हड्डी का चूरा,** तथा कृत्रिम सिंथेटिक झाग (सोडियम लारेल सल्फेट के रूप) में मिलाया जाता है **जो कि अभक्ष्य है** तथा पेट में जाकर आँतों तथा किडनी को नुकसान पहुँचाता है। **अमेरिका में कोलगेट पेस्ट का उपयोग 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को नहीं करने की चेतावनी लिखी होती है जो कि हमारे देश में लागू नहीं है।** अतः विकल्प के रूप में बबूल या अन्य आयुर्वेदिक टूथपेस्ट, विक्को वज्रदन्ती, लाल दन्त मँजन आदि टूथपावडर या जी-32 गोली अथवा देशी नीम, बबूल या मिस्वाक की दातुनों का उपयोग कर सकते हैं।

क्रमशः ....

केन्द्र तत्काल हस्तक्षेप करे

आचार्य विद्यासागर जी ने केन्द्र सरकार द्वारा पारित मोर पंखों पर लगाए प्रतिबंध के अधिनियम पर कहा कि आदिनाथ भगवान के समय से लेकर अब तक जितने भी साधु साध्वियाँ हुई हैं उन सबको कमंडल के साथ पिच्छी रखना अनिवार्य है। धर्म के प्राचीन ग्रंथ मूलाचार एवं भगवती आराधना में भी उल्लेख है कि बिना पिच्छी के साधु सात कदम भी नहीं चल सकते। यह उनके समाधिमरण तक साथ रहती है। आचार्य श्री ने कहा कि केन्द्र सरकार का मयूर पिच्छी संबंधी प्रस्ताव दिगंबर जैन धर्म के साधुओं की आवश्यकताओं में बाधक है। सरकार को साधुओं की चर्या को ध्यान में रखते हुए जैन धर्म के हित में सकारात्मक निर्णय लेकर उनकी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। साथ ही देश के राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री को जैन धर्म की अनिवार्यताओं का ध्यान रखते हुए तत्काल हस्तक्षेप करना चाहिए।

साधु साध्वियाँ वर्ष में एक बार पुरानी पिच्छी को बदलकर नई पिच्छी ग्रहण करते हैं। नई पिच्छी का निर्माण पूर्णतः अहिंसक तरीके से अर्थात् जंगल में मोर के द्वारा स्वतः छोड़े गये पंखों द्वारा ही किया जाता है। मोर पंखों द्वारा धूल/जल का ग्रहण नहीं करने तथा उनमें कोमलता व मृदुता का गुण होने से प्राणियों की रक्षा होती है।

जैन दर्शन में काल विषयक अवधारणा

धर्म का अस्तित्त्व और कालव्यवस्था

डॉ. संजय जैन, पथरिया (दमोह)

गतांक से आगे..........

ऐसे उत्सर्पिणी के दुषमा-दुषमा से लेकर काल के छः भेद हैं उनमें छठे काल से पहले तक परिवर्तन चलता है। अवसर्पिणी में आयु, शरीर की ऊँचाई आदि का ह्रास होता हैं व उत्सर्पिणी में आयु, शरीर की ऊँचाई सुख आदि की वृद्धि होती जाती है।

प्रथम, द्वितीय, तृतीय काल में यहाँ भोग भूमि की व्यवस्था होती है और चतुर्थकाल में कर्म भूमि की व्यवस्था में चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलभद्र, नौ नारायण, नौ प्रति नारायण ऐसे त्रेसठ शलाका पुरुष जन्म लेते हैं। इस बार यहाँ हुंडावसर्पिणी दोष से नौ नारद, नौ रुद्र भी उत्पन्न हुये हैं। पुनः पंचमकाल और छठाकाल आता है। यहाँ अभी पंचमकाल चल रहा है इसमें धर्म का ह्रास होते-हाते छठे काल में धर्म नहीं रहता है प्रायः मनुष्य पाशविक वृत्ति के बन जाते हैं। विद्याधर की दोनों श्रेणियों की एक सौ दस नगरियों में और पांच म्लेच्छ खण्डों में चतुर्थकाल की आदि से अंत तक काल परिवर्तन होता है। अवसर्पिणी काल का परिमाण दस कोड़ाकोड़ी सागर है और उत्सर्पिणी का भी दस कोड़ाकोड़ी सागर है। इन दोनों को मिलाकर बीस कोड़ाकोड़ी सागर परिमाण को कल्पकाल कहते हैं।

जब पहले इस भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड में सुषमा-सुषमा काल चल रहा था, तब वहाँ के मनुष्य के शरीर की ऊँचाई तीन कोस की थी और आयु तीन पल्य की थी, वे स्वर्ण सदृश वर्ण के थे, वे तीन दिन बाद कल्पवृक्षों से प्राप्त बदरी फल बराबर उत्तम भोजन ग्रहण करते थे उनके मल-मूत्र, पसीना, रोग, अल्पमृत्यु आदि बधायें नहीं थीं। वहां की स्त्रियाँ आयु के नौ महिने शेष रहने पर गर्भधारण करती थीं और युगल-पुत्र पुत्री को जन्म देती थीं। संतान के जन्म होते ही पुरुष को जंभाई और स्त्री को छींक आने से वे मर जाते थे। ये युगल वृद्धि को प्राप्त होकर कल्पवृक्षों से उत्तम सुख का अनुभव करते थे। पानांग, तूर्यांग, भूषणांग, माल्यांग, ज्योतिरांग, दीपांग, गृहांग, भोजनांग, पात्रांग, और वस्त्रांग ये उत्तम वृक्ष अपने नाम के अनुसार ही उत्तम वस्तुएँ मांगने पर देते हैं। इसे उत्तम भोग भूमि कहते हैं। इस काल के प्रारंभ में मनुष्य उत्तरकुरू के मनुष्य के समान होते हैं फिर क्रम से हानि होने पर धीरे-धीरे आयु आदि घटते-घटते प्रथम काल समाप्त होकर दूसरा काल तीन कोड़ाकोड़ी सागर परिमाण का सुषमा काल प्राप्त होता है। इसके प्रारंभ में मनुष्य हरिवर्ष के मनुष्यों के समान होते हैं तब मनुष्यों की आयु दो पल्य, शरीर की ऊँचाई दो कोस और शरीर का वर्ण चन्द्रमा के समान रहता है। ये लोग दो दिन बाद कल्पवृक्षों से प्राप्त हुए बहेड़े के बराबर भोजन ग्रहण करते है इसे मध्यम भोग भूमि

कहते हैं। द्वितीय काल पूर्ण हो जाने के बाद तदनन्तर क्रम से हानि होने पर दो कोड़ाकोड़ी सागर परिमाण का तृतीय काल सुषमा-दुषमा के मनुष्यों की आयु एक पल्य, ऊँचाई एक कोस और शरीर का वर्ण हरित रहता है। ये एक दिन के अन्तर से आँवले के बराबर भोजन ग्रहण करते हैं। आगे क्रम से आयु आदि घटती जाती है इसे जघन्य भोग भूमि कहते हैं।

जब तृतीय काल में पल्य का आठवाँ भाग शेष रह गया तब ज्योतिरांग कल्पवृक्षों का प्रकाश मंद पढ़ने से आकाश में सतत् घूमने वाले सूर्य चन्द्र दिखने लगे। उस समय प्रजा के डरने से प्रतिश्रुति नाम के कुलकर ने उनको वास्तविक स्थिति बताकर उनका डर दूर किया। ऐसे ही क्रमशः तेरह कुलकर और हुए। अंतिम कुलकर महाराज नाभिराज थे उनकी पत्नि मरुदेवी युगलिया जन्म न लेकर किसी प्रधान कुल की कन्या थी। उन दोनों का ब्याह इन्द्रों ने बड़े उत्सवों से कराया था।

पुनः चतुर्थ काल में जब चौरासी लाख पूर्व वर्ष, तीन वर्ष साढे आठ माह काल बाकी था, तब अंतिम कुलकर नाभिराज की रानी मरुदेवी के गर्भ में भगवान वृषभ देव आये और नौ महिने बाद जन्म लिया। ये प्रथम तीर्थंकर थे, इनकी आयु चौरासी लाख वर्ष पूर्व की थी। उन्होंने कल्पवृक्ष के नष्ट हो जाने के बाद प्रजा को असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और विद्या इन षट्क्रियाओं से आजीविका करना बतलाया। क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये तीन वर्ण स्थापित किये। भगवान ने विदेह क्षेत्र की स्थिति को अपने अवधिज्ञान से जान कर ये सब व्यवस्था बनाई। भगवान की आज्ञा से इन्द्र ने कौशल, काशी, आदि देश अयोध्या, हस्तिनापुर, उज्जयिनी आदि नगरियों की रचना की। इस काल में मनुष्यों की उत्कृष्ट आयु एक पूर्वकोटि और शरीर पाँच सौ धनुष का ऊँचा होता था।

भगवान ने अपनी ब्राह्मी और सुंदरी पुत्रियों को क्रमशः ब्राह्मी लिपि और अंक लिपि सिखाई। पुत्र पुत्रियों को सम्पूर्ण विद्याओं में निष्णात किया। अनन्तर दीक्षा लेकर मोक्षमार्ग को प्रगट किया। पुनः केवलज्ञान होने के बाद साक्षात् संपूर्ण जगत् को जान लिया और अंत में चतुर्थ काल के तीन वर्ष, आठ माह और एक पक्ष शेष रहने पर वे कैलाश पर्वत से मोक्ष चले गये। तृतीय काल का शेष समय बीतने के उपरांत चतुर्थ काल प्रारंभ हुआ । यह काल ब्यालीस हजार वर्ष कम एक कोड़ाकोड़ी सागर का था, इसके प्रारंभ में मनुष्य विदेह क्षेत्र के मनुष्यों के समान होते हैं। अनन्तर क्रम से तेईस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलभद्र, नौ नारायण, नौ प्रति नारायण, त्रैसठ शलाका महापुरुष हुए हैं। प्रथम चक्रवर्ती भरत महाराज थे। अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर ने वृषभदेव के समान केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद असंख्य भव्य जीवों को धर्मोपदेश दिया है। महावीर स्वामी भी पंचमकाल के तीन वर्ष आठ माह एक पक्ष शेष रहने पर कार्तिक कृष्ण अमावस्या के उषा काल में पावापुरी से मोक्ष गये थे।

उसके बाद तदन्तर क्रम से हानि होकर इक्कीस हजार वर्ष का दुषमा पँचम काल आ गया इसमें मनुष्यों की उत्कृष्ट आयु एक सौ बीस वर्ष और शरीर की ऊँचाई अधिक से अधिक सात हाथ

की थी। दिन पर दिन आयु आदि घट रही है। महावीर स्वामी को मोक्ष हुए अब तक लगभग ढाई हजार वर्ष व्यतीत हो गये हैं। हम लोग इस पंचम काल के मनुष्य हैं।

आगे साढ़े अठारह हजार वर्ष तक महावीर का शासन चलता रहेगा। अन्त में एक राजा दिगंबर मुनि से प्रथम ग्रास को शुल्क रूप में माँगेगा तब मुनि अन्तराय करके जाकर आर्यिका, श्रावक, श्राविकारूप, चतुर्विध संघ सहित सल्लेखना ग्रहण कर मर कर स्वर्ग जायेंगे। उस समय धरणेन्द्र कुपित हो राजा को मार देगा। तब राजा नरक जायेगा। बस! धर्म का और राजा का अन्त हो जायेगा।

अनन्तर इक्कीस हजार वर्ष का छठा काल आयेगा उस समय मनुष्यों का शरीर एक हाथ का, आयु सोलह वर्ष की मात्र रह जायेगी। ये मनुष्य पशुवृत्ति करेंगे, मांसाहारी होंगे, जंगलों में घूमेंगे, दुःखी, दरिद्री, रोगी, कुटुम्बहीन होंगे। पुनः इक्कीस हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर उनन्चास दिन के प्रलय के बाद छठा काल समाप्त होगा और देव-विद्याधरों के द्वारा रक्षा किये गये कुछ मनुष्य जीवित रहकर पुनः सृष्टि की परम्परा बढ़ायेंगे। उत्सर्पिणी के छठे काल के बाद धीरे-धीरे पँचम आदि काल आते रहेंगे। यह काल परिवर्तन परम्परा अनादि है।

पंचमेरु संबंधी पाँच भरत और पाँच ऐरावत (इन दस) क्षेत्रों के आर्यखण्डों में वृद्धि-ह्रास युक्त छःकाल उत्सर्पिणी संबंधी और छः काल अवसर्पिणी संबंधी इस प्रकार बारह कालों का निरन्तर प्रवर्तन चलता रहता है। विजयार्ध पवर्त की श्रेणियों, भरत ऐरावत संबंधी दस क्षेत्रों के पाँच-पाँच म्लेच्छ खण्डों में प्रलय रहित चतुर्थ काल की वर्तना शाश्वत् रहती है, किन्तु भरत ऐरावत क्षेत्रों के आर्यखण्डों में जीवों के काय, आयु एवं सुख आदि का जिस प्रकार वृद्धि ह्रास होता है, उसी सदृश वृद्धि-ह्रास वहाँ भी होता है अर्थात् भरत ऐरावत क्षेत्रों के आर्यखण्डों में उत्सर्पिणी के काल के तृतीय काल (क्योंकि जो अवसर्पिणी का चतुर्थ काल है, वहीं उत्सर्पिणी का तृतीय काल है) में आदि से अन्त तक जैसी वृद्धि होती है, वैसी ही वृद्धि वहाँ (म्लेच्छखण्डों में और विजयार्ध में) होती है।

विजयार्ध की श्रेणियों में और म्लेच्छखण्डों में शेषकालों के सदृश वर्तना कभी नहीं होती अर्थात् वहाँ अवसर्पिणी के पाँचवें और छठवें तथा उत्सर्पिणी के पहले और दूसरे काल सदृश वर्तना कदापि नहीं होती। पंचमेरु संबंधी पाँच पूर्वविदेह और पाँच पश्चिमविदेह, इस प्रकार पूर्वापर दस विदेह क्षेत्रों में मोक्षमार्ग के प्रवर्तक मात्र एक चतुर्थ काल के एक सदृश वर्तना होती है, लेकिन जैसी यहां आर्यखण्डों संबंधी चतुर्थकाल में आयु आदि हीनाधिक होती है, वैसी वहाँ नहीं होती। वहां अवसर्पिणी संबंधी चतुर्थ काल के प्रारंभ में जैसी वर्तना होती है, वहाँ निरन्तर होती रहती है। यहाँ अवसर्पिणी के प्रथम काल के प्रारंभ में आयु, उत्सेध एवं सुख आदि की जो वर्तना हाती है वैसी ही वर्तना पंचमेरुओं के उत्तर और दक्षिण में अवस्थित उत्तरकुरु और देवकुरु नाम उत्तम भोग भूमियों में निरन्तर रहती है। अवसर्पिणी के द्वितीय काल के प्रारंभ सदृश पंचमेरू संबंधी हरि और रम्यक क्षेत्रों की

दस मध्यम भोग भूमियों में वृद्धि-ह्रास से रहित वर्तना होती है। इसी प्रकार अवसर्पिणी के तृतीय काल के प्रारंभ सदृश हैमवत् और हैरण्यवत् क्षेत्रगत दस जघन्य भोगभूमियों में शाश्वत् वर्तना होती है। मानुषोत्तर पर्वत से बाहर और स्वयंम्भूरमण द्वीप के मध्य में अवस्थित नागेन्द्र पर्वत के भीतर-भीतर तिर्यक्लोक संबंधी असंख्यात द्वीपों में जघन्य भोगभूमि का वर्तन होता है। अवसर्पिणी के तृतीय काल के प्रारंभ में जघन्य भोगभूमिजन्य जैसा वर्तन होता है। वैसा वर्तन वहां शाश्वत् होता है।

नागेन्द्र पर्वत के बाह्य भाग से स्वयम्भूरमण समुद्र के अंत पर्यन्त अर्थात् अर्ध स्वयम्भूरमण द्वीप में और स्वयम्भूरमण समुद्र में अवसर्पिणी के पंचमकाल के प्रारम्भ सदृश हानि-वृद्धि रहित पंचम काल का ही नित्य वर्तन होता है। चतुर्णिकाय देवों के स्वर्गादिक सभी स्थानों में सुख के सागर स्वरूप सुषमा-सुषमा काल के सदृश ही नित्य वर्तन होता है सातों नरक भूमियों में नारकी जीवों के नित्य ही समस्त असाता की खान दुषमा-दुषमा काल के सदृश वर्तन होता है। स्वर्गों एवं नरकों में अत्यन्त सुखों एवं अन्यंत दुखों की विवक्षा से यह कथन किया गया है, आयु तथा उत्सेध आदि की विवक्षा से नहीं।

यह षट्काल परिवर्तन भरत-ऐरावत के आर्य खंडों में ही होता है अन्यत्र नहीं।

क्रमश ....

हस्तिनापुर में धर्मप्रभावना

हस्तिानुपर की पावन धरा पर जहाँ तीन-तीन तीर्थंकरों के चार-चार कल्याणक हुए, भगवान आदिनाथ का मुनि पर्याय में इच्छुरस का आहार हुआ और अक्षय तृतीया पर्व का प्रादुर्भाव हुआ एवं मुनि विष्णुकुमार ने अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों के उपसर्ग को दूर कर रक्षा बंधन जैसे पर्व का सूत्रपात किया। ऐसी पूज्यनीय धरा पर 10 जून 2010 को संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य मुनि श्री 108 आर्जवसागरजी महाराज का मंगल प्रवेश हुआ। मंदिर एवं क्षेत्र का भ्रमण कर मुनिश्री ने अपने कुशल व्यवहार, शुद्ध आराधना एवं साधना से जन मानस को अपनी ओर आकर्षित किया। मुनिश्री आर्जवसागर जी ने मंगल प्रवचन करके उदाहरणों के माध्यम से धर्म की ज्ञान गंगा प्रवाहित करके जेठी के मेले पर श्री दिगम्बर जैन प्राचीन बड़ा मंदिर में उपस्थित धर्मावलम्बियों को भाव विभोर कर दिया। मुझे तो मुनिश्री के रूप मोक्षमार्गी गुरु को पाकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। गुरु के लिए कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। गुरु का संदेश तो कुछ ऐसा है कि-

बांधे रहो सबके हृदय, सद्भावना की डोर से ।
अहिंसा और प्रेम का यह संदेश है, मुनि आर्जवसागर जी की ओर से ।।

मैं गुरुवर के पावन चरणों में शत् शत् नमन करता हूँ, और मंगल आशीर्वाद की कामना करता हूँ

दिनेश कुमार जैन, मंत्री श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी, हस्तिनापुर (मेरठ)

अक्षय तृतीया पर्व

संकलन : सुशीला पाटनी

प्रतिवर्ष वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षयतृतीया पर्व मनाया जाता है। यह पर्व प्राचीन है क्योंकि प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव मुनि मुद्रा को धारण कर छह माह मौन साधना करने के बाद प्रथम आहारचर्या हेतु निकले। परन्तु आहारदान विधि का प्रचार नहीं होने से उनको 6 माह तक आहार नहीं मिला। एक बार वे आहार के लिए हस्तिनापुर नगर में पधारे। दूर से उन्हें आते देख राजा श्रेयांस को अपने पूर्वजन्म का स्मरण हो गया, तत्पश्चात् उन्होंने विहार करते हुए भगवान् ऋषभदेव के सामने आने पर श्रद्धा विनय आदि गुणों से युक्त हो, हे स्वामिन्! हे भगवान्! अत्र अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ यह कहकर पड़गाहनकर उन्हीं को भीतर ले गये। उच्चासन पर विराजमान कर उनके चरण कमल धोए, पूजन करके, मन-वचन-काय से नमस्कार किया। तत्पश्चात् इक्षुरस से भरा हुआ कलश उठाकर कहा कि हे प्रभो! यह इक्षुरस सोलह उद्‌गम दोष, सोलह उत्पादन दोष, दश एषणा दोष तथा धूम, अङ्गार प्रमाण और संयोजन इन 4 दाता सम्बन्धी दोषों से रहित एवं प्रासुक है, अतः इसे आप ग्रहण कीजिये। अनन्तर भगवान् ऋषभदेव ने चारित्र की वृद्धि के लिए पारणा की।

राजा श्रेयांस के गृह महल में तीर्थंकर के आहार होने के प्रभाव से पंचाश्चर्य (1) रत्नवृष्टि (2) पुष्पवृष्टि (3) दुन्दुभि बाजों का बजना (4) शीतल सुगन्धित मन्द-मन्द वायु चलना (5) अहो दानम्-अहो दानम् (जय जयकार) के प्रशंसा वाक्य प्रकट हुए।

प्रथम आहारचर्या की सूचना पाते ही देवों एवं भरतचक्रवर्ती आदि राजाओं ने भी राजा श्रेयांस का सम्मान किया। पूर्व घटना का स्मरण कर राजा श्रेयांस ने जो दान रूपी धर्म की विधि बताई, उसे दान का प्रत्यक्ष फल देखने वाले भरतादि राजाओं ने बड़ी श्रद्धा के साथ श्रवण किया। दान सम्बन्धी पुण्य का संग्रह करने के लिए नवधाभक्ति जानने योग्य है। दान देने से जो पुण्य संचय होता है, वह दाता के लिए स्वर्गादि फल देकर अन्त में मोक्षफल देता है।

जिस दिन तीर्थंकर ऋषभदेव का आहार हुआ था उस दिन वैशाख शुक्ला तृतीया थी। उस दिन राजा श्रेयांस के यहाँ रसोईगृह में भोजन अक्षीण (कभी न खत्म होने वाला) हो गया था। अतः आज भी लोग इसे अक्षय तृतीया कहते हैं। भरतक्षेत्र में (इस चौबीसी में) इसी दिन से दान देने की प्रथा प्रचलित हुई। यह पर्व जैन समाज की भाँति हिन्दू समाज में भी मनाया जाता है।

ऐसी मान्यता है कि तीर्थंकर मुनि को प्रथम आहार देने वाला उसी पर्याय से या तीसरी पर्याय से अवश्य मोक्ष प्राप्त करता है। कुछ लोगों की ऐसी मान्यता है कि तीर्थंकर मुनि को आहार दान देकर राजा श्रेयांस ने अक्षय पुण्य प्राप्त किया था। अतः यह तिथि अक्षय तृतीया कहलाती है।

अक्षय तृतीया को लोग इतना शुभ मानते हैं कि इस दिन बिना मुहूर्त लग्न के पुत्र-पुत्रियों के विवाह, नवीन गृह प्रवेश, दुकान का मुहुर्त भी करके गौरव का अनुभव करते हैं। जैन समाज का विश्वास है कि इस दिन प्रारम्भ किया गया नया कार्य नियमतः सफल होता है।

प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द्र जैन का संक्षिप्त परिचय

1 जुलाई सन् 1926 को लक्ष्मीचन्द्र जैन का जन्म मध्यप्रदेश के सागर नगर में हुआ। आपके पिताश्री स्व. दमरुलाल जी जैन धर्मनिष्ठ शिक्षक एवं मातेश्वरी स्व. श्रीमती चमेलीबाई थीं। प्रारम्भिक शिक्षा शासकीय उच्च हाई स्कूल, सागर से 1942 में समाप्त हुई। तदुपरान्त स्नातक-स्नातकोत्तर शिक्षा जबलपुर विश्वविद्यालय एवं डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में 1949 में समाप्त हुई। उन्होंने मध्यप्रदेश स्टेट एजुकेशनल सर्विस नागपुर कॉलेज ऑफ साईंस में 1951 में नियुक्ति प्राप्त की।

इस समय डॉ. हीरालाल जैन नागपुर मारिस कॉलेज में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष थे तथा उस समय तक धवला ग्रन्थ के दसवें भाग का प्रकाशन हो चुका था। प्रो. लक्ष्मीचन्द्र प्रयुक्त गणित के दक्ष विद्वान थे। प्रो. लक्ष्मी चन्द्र जैन की जैन-साहित्य में गहरी रुचि के कारण ही वह डॉ. हीरालाल जी के सम्पर्क में आये। सर्वप्रथम डॉ. साहब की प्रेरणा पाकर उन्होंने जगत प्रसिद्ध 9वीं शताब्दी के जैन गणितज्ञ महावीराचार्य **गणितसार संग्रह** का हिन्दी अनुवाद एवं सम्पादन निष्पन्न किया। इसके पश्चात् डॉ. साहब ने सम्पूर्ण **त्रिलोक प्रज्ञप्ति** के गणित पर कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। जिसका प्रकाशन सोलापुर जीवराज ग्रन्थमाला के **जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति** संग्रह के रूप में 1958 में हुआ। तत्पश्चात् प्रो. साहब ने कर्म सिद्धान्त के गणितज्ञ स्वरूप का अर्थसंदृष्टिमय गहन अध्ययन में अपना शेष जीवन समर्पित कर दिया। आपकी सबसे बड़ी सूचनात्मक तथा लोकप्रिय पुस्तक “The Tao of Jaina Sciences” है। इसमें जैन साईंसेस के समसामयिक इतिहास व दर्शन का विशद विवेचनात्मक वर्णन है। श्री लक्ष्मीचन्द्र जी का जीवन प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन से बहुत प्रभावित रहा। उनके ऊपर आपने लगभग 25 लेख लिखे जो जापान आदि देश-विदेशों में प्रकाशित हुए । आपकी विशेष रुचि एक सूत्रीय सिद्धान्त का निर्माण करने में रही है। इस कार्य में उन्हें टोक्यो यूनिवर्सिटी के एमेरिटस प्रोफेसर कोजुओ कोण्डो से प्रायः 40 वर्षों तक सहयोग मिलता रहा। कोजुओ कोण्डो का संपूर्ण साहित्य प्रोफेसर एल.सी. जैन के पास शोध हेतु उपलब्ध है।

उन्होंने आधुनिकतम समसामयिक गणित, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान का मन्थन किया जो अनेक भाषाओं में सम्पन्न रुप से विद्यमान था। कर्म सिद्धान्त के तुलनात्मक अध्ययन की ओर उनका ध्यान गया और गणित के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करते हुए उस पर अनेक शोधपूर्ण लेख लिखकर देश-विदेश की शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाते रहे। सन् 1984 में शासकीय सेवा से निवृत्त होकर श्रीवर्णी दिगम्बर जैन गुरुकुल पिसनहारी मढ़िया, जबलपुर में आचार्य श्री विद्यासागर शोध संस्थान में नियुक्ति ली। तत्पश्चात् उन्होंने INSA (भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी), नई दिल्ली के आमन्त्रण पर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर से सम्बद्ध होकर 3 प्रोजेक्ट अपने सहयोगियों के साथ मिलकर क्रियान्वित किये, जो 1995 में समाप्त हुए। उनके दो प्रोजेक्ट निम्नलिखित तीन सीरीज में प्रकाशित हुए हैं जिनमें अंतिम सीरीज के दो खण्ड प्रेस में हैं :-

1. एक्जेक्ट साईंसेस इन दा कर्म एन्टीक्विटी, भाग 1, 2, 3, 4 (ति.प., त्रि.सा., ज.प्र., लो.वि.)
2. मेथामेटिकल साईंसेस इन दा कर्म एन्टीक्विटी, (भाग 1-2 गोम्मटसार, जीवकाण्ड-कर्मकाण्ड)
3. सिस्टेमिक साईंसेस इन दा कर्म एन्टीक्विटी, (लब्धिसार, क्षपणासार एवं परिशिष्ट)

श्री ब्राह्मी सुन्दरी प्रस्थाश्रम, जबलपुर एवं गुलाब रानी कर्म विज्ञान संग्रहालय, जबलपुर द्वारा किये गये उपरोक्त इन नौ ग्रन्थों में से शेष अन्तिम दो ग्रन्थ मुद्रणार्थ प्रेस में हैं। उपरोक्त ग्रन्थ श्रृखंला का सारभूत ग्रन्थ **दा ताओ ऑफ जैन साईंसेस्** “The Tao of Jaina Sciences” भी प्रो. लक्ष्मीचन्द्र द्वारा प्रकाशित किया गया, जिसमें गणितमय सम्पूर्ण जैन आगम ग्रन्थों का सार आ गया है।

प्रो. एल.सी. जैन द्वारा विगत वर्षों में किए गए जैन कर्म सिद्धांत के गणितीय कार्यों की विस्तृत जानकारी हेतु वेबसाइट www.mathematical-karma-arena.com पर लागिन करें।

प्रशस्ति पत्र

'लौकिके वैदिके वापि तथा सामायिकेऽपि यः।
व्यापारस्तत्र सर्वत्र संख्यानमुपयुज्यते।।' -गणित शास्त्र

आधुनिकतम समसामयिक गणितज्ञ, भौतिक शास्त्र,
रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान के विशेषज्ञ,
कर्म सिद्धान्त के तुलनात्मक अध्ययनकर्ता,
अनेक पुस्तकों के रचयिता, अनेक पुरस्कार प्राप्तकर्ता
अनेक साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं से संबद्ध
सिद्धहस्त सम्पादनकर्ता, यशस्वी लेखक,
आदर्श शिक्षक, कुशल प्रवक्ता, गुरुभक्त

प्रो. (डॉ.) लक्ष्मी चन्द्र जैन
जबलपुर

के करकमलों में उनकी बहुआयामी सेवाओं के लिए
कुन्दकुन्द भारती द्वारा प्रवर्तित

सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य आचार्यश्री विद्यानन्द जी मुनिराज
के पावन सान्निध्य में

महावीराचार्य पुरस्कार

दिगम्बर जैन सभा ऋषभ विहार, दिल्ली
द्वारा प्रदत्त

एक लक्ष रुपयों की सम्मान-राशि के साथ
सबहुमान समर्पित किया जाता है तथा आपको

संख्यान शिरोमणि

के मानद विरुद से सादर विभूषित किया जाता है।

हम हैं आपके शुभाकांक्षी

सतीश जैन (AIR)	हेमचन्द जैन	प्रेमचन्द जैन	सुरेश चन्द जैन
संयोजक	मन्त्री	अध्यक्ष	अध्यक्ष
पुरस्कार समारोह	दिगम्बर जैन सभा ऋषभ विहार		कुन्दकुन्द भारती

दिनांक : 22 अप्रैल, 2010 वीरवार, वीर निर्वाण संवत् 2536
स्थान : आचार्य शान्तिसागर पार्क, ऋषभ विहार, दिल्ली-110092

ॐ

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

ग्रन्थमाला संपादकीय

पढ़ना, लिखना और गिनना ये मनुष्य की मौलिक क्रियायें मानी गई हैं। जैन-शास्त्रों में जिन बहत्तर कलाओं का उल्लेख मिलता है उनमें सर्वप्रथम स्थान लेख का और दूसरा गणित का है। तथापि आगमों में प्रायः इन कलाओं को 'लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ' अर्थात् लेखादिक, किन्तु गणित प्रधान कहा गया है। इससे सिद्ध होता है कि बालक की शिक्षा में एवं मानवीय व्यवहार में गणित का बड़ा महत्त्व था।

जैन-साहित्य यद्यपि धर्म व दर्शन प्रधान है, तथापि उसमें गणित-शास्त्र का उपयोग व व्याख्यान पद पद पर पाया जाता है। विशेषतः इस साहित्य के चार अनुयोग—प्रथम, करण, चरण और द्रव्य माने गये हैं। उनमें करणानुयोग में लोक का स्वरूप वर्णित पाया जाता है; और उस निमित्त से सूर्य, चन्द्र व नक्षत्र तथा द्वीप, समुद्र आदि के विवरणों में गणित की नाना प्रक्रियाओं का प्रचुरता से उपयोग किया गया है। सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति एवं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति नामक उपाङ्गों में तथा तिलोयपण्णत्ति, षट्खंडागम की धवला टीका एवं गोम्मटसार व त्रिलोकसार तथा उनकी टीकाओं में प्रचुरता से गणित का प्रयोग पाया जाता है; और वह भारतीय प्राचीन गणित के विकास को समझने के लिये बड़ा महत्त्वपूर्ण है। सूर्यप्रज्ञप्ति को तो गणितानुयोग भी कहा गया है। वैदिक परम्परा में गणित का विषय वेदाङ्ग ज्योतिष आदि ज्योतिष के ग्रंथों में प्रयुक्त पाया जाता है। पाँचवीं शती में हुए आर्यभट्ट ही एक सर्वप्रथम ज्योतिषी पाये जाते हैं जिन्होंने अपने आर्यभट्टीय नामक कृति में ३३ श्लोकात्मक गणित का एक प्रकरण स्वतंत्र रूप से जोड़ा है। उनके पश्चात् हुए ब्रह्मगुप्त ने भी अपने ब्राह्म स्फुट सिद्धान्त नामक ग्रंथ में गणित का एक अध्याय जोड़ा है।

इस समस्त परम्परा में एक भी ऐसा ग्रंथ नहीं दिखाई देता जो पूर्णतः गणित विषयक कहा जा सके। ऐसा सर्वप्रथम ग्रंथ महावीराचार्य कृत गणितसार-संग्रह ही है जिसकी रचना राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष के राज्यकाल में हुई थी जो सन् ८१५ से ८८० ईस्वी तक पाया जाता है। यह राजा जैनधर्म का बड़ा

अनुरागी था और उसके संरक्षण में बहुत से जैन साहित्य की रचना हुई। राजा स्वयं एक कवि था और प्रश्नोत्तर-रत्न-मालिका नामक प्रख्यात सुभाषित कविता उसी की बनाई सिद्ध होती है। प्रस्तुत ग्रंथ की उत्थानिका में ही अमोघवर्ष की बड़ी प्रशंसा की गई है। यहाँ जो उन्हें महान् धर्मख्यात-चारित्र-जलधि आदि विशेषण दिये गये हैं उनपर से ऐसा अनुमान होता है कि उन्होंने राज्यत्याग कर मुनिधर्म धारण किया था। रत्नमालिका के अन्त में जो उन्हें 'विवेकात् त्यक्तराज्येन' कहा है उससे भी इसी बात का समर्थन होता है। (देखिये डॉ० ही० ला० जैन, राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष की जैन-दीक्षा, जैन सिद्धान्त भास्कर, आरा, १९४३)। एक पूर्णतः गणित विषयक ग्रंथ ऐसा भी मिला है जो आश्चर्य नहीं महावीराचार्य से पूर्वकालीन हो। पेशावर के समीप बक्षाली नामक ग्राम में भूमि के भीतर से एक भूर्ज पत्र पर लिखे हुए ग्रंथ के खंड सन् १८८१ में प्राप्त हुए। इनकी छानबीन से पता चला कि इनमें भिन्न, वर्गमूल, समान्तर और गुणोत्तर श्रेढियां आदि गणित की प्रक्रियाओं का वर्णन है। कुछ विद्वान् इस ग्रंथ को तीसरी चौथी शती की रचना का अनुमान करते हैं और कुछ इसे बारहवीं शती के लगभग रखने के भी पक्ष में हैं। (देखिये Bibhutibhusan Datta, The Bakhshālī Mathematics, Bul. Cal. Math. Soc., XXI, 1 (1929), pp. 1–60).

प्रस्तुत सर्वांगपूर्ण गणित ग्रंथ के महत्त्व को समझ कर इसका सम्पादन प्रोफेसर रंगाचार्य ने अंग्रेजी अनुवाद सहित सन् १९१२ में किया था जिसका प्रकाशन मद्रास गवर्नमेंट की ओर से हुआ था। इधर अनेक वर्षों से वह प्रकाशन अलभ्य है जिसके कारण प्राचीन गणित के विद्वानों व शोधकों को बड़ी असुविधा प्रतीत होती थी। इसी कारण यह आवश्यक समझा गया कि इस ग्रंथ का पुनः संशोधन, अनुवाद व प्रकाशन कराया जाय। यह कार्य गणित के प्राध्यापक श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन ने अपने हाथ में लिया और उन्होंने अपने हिन्दी अनुवाद तथा प्रस्तावना में विषय को सुस्पष्ट करने में बड़ा परिश्रम किया है जिसके लिये हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। प्रस्तुत ग्रंथमाला के अधिकारियों ने इस ग्रंथ को प्रकाशित करना सहर्ष स्वीकार किया इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस ग्रंथ के लिए प्रो० भूपाल बाळप्पा बागी (धारवाड) ने महत्त्वपूर्ण प्रास्ताविक लिखा है, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं। अनेक सम्पादन व मुद्रण सम्बन्धी कठिनाइयों के कारण ग्रंथ के प्रकाशन में बहुत विलम्ब हुआ इसका हमें दुख है। विद्वानों से हमारी प्रार्थना है कि वे इस महत्त्वपूर्ण शास्त्र के सम्बन्ध में अपने अभिमत व सुझाव निस्संकोच भेजने की कृपा करें, जिससे विषय का उत्तरोत्तर परिमार्जन होता रहे।

ही. ला. जैन
आ. ने. उपाध्ये
प्रधान सम्पादक

ॐ

महावीराचार्यप्रणीतः

गणितसारसंग्रहः

१. संज्ञाधिकारः

मङ्गलाचरणम्

अलङ्घ्यं त्रिजगत्सारं यस्यानन्तचतुष्टयम् । नमस्तस्मै जिनेन्द्राय महावीराय तायिने ॥ १ ॥
संख्याज्ञानप्रदीपेन जैनेन्द्रेण महात्विषा । प्रकाशितं जगत्सर्वं येन तं प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥
[2]प्रीणितः प्राणिसस्यौघो[3] निरीतिर्निरवग्रहः । श्रीमताऽमोघवर्षेण येन स्वेष्टहितैषिणा ॥ ३ ॥
पापरूपाः परा यस्य चित्तवृत्तिहविर्भुजि । भस्मसाद्भावमीयुस्तेऽवन्ध्यकोपोऽभवत्ततः ॥ ४ ॥
वशीकुर्वन् जगत्सर्वं स्वयं नानुवशः परैः । नाभिभूतः प्रभुस्तस्मादपूर्वमकरध्वजः ॥ ५ ॥
यो विक्रमक्रमाक्रान्तचक्रिचक्रकृतक्रियः । चक्रिकाभञ्जनो नाम्ना चक्रिकाभञ्जनोऽञ्जसा ॥ ६ ॥

१ MB मह० । २ M प्रणीतः । ३ M सर्गौ० । ४ MK सद्भां । ५ KPB भवेत् । ६ B योऽयं । ७ M क्री० । ८ MB दा० ।

१. संज्ञा (पारिभाषिक शब्द) अधिकार

मङ्गलाचरण

जिन्होंने तीनों लोकों में सारभूत एवं मिथ्या दृष्टियों द्वारा अलंघ्य अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त वीर्य और अनन्त सुख नामक अनन्त चतुष्टय को प्राप्त किया, ऐसे रक्षक जिनेन्द्र भगवान् महावीर को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥ मैं महान् विभूति को प्राप्त जिनेन्द्र को नमन करता हूँ जिन्होंने संख्या-ज्ञान के प्रदीप से समस्त विश्व को प्रकाशवान किया है ॥ २ ॥ धन्य हैं वे अमोघवर्ष (अर्थात् वे जो वास्तव में उपयोगी वृष्टि की वर्षा करते हैं,) जो हमेशा अपने प्रियपात्रों के हितचिन्तन में रहते हैं और जिनके द्वारा प्राणी तथा वनस्पति, महामारी और दुर्भिक्ष आदि से मुक्त होकर सुखी हुए हैं ॥ ३ ॥ जिन (अमोघवर्ष) के चित्त की क्रियायें अग्निपुंज सदृश होकर समस्त पापरूपी वैरियों को भस्म में परिणत करने में सफल हैं, और जिनका क्रोध व्यर्थ नहीं जाता ॥ ४ ॥ जिन्होंने समस्त संसार को अपने वश में कर लिया है और जो किसी के वश में न रहकर शत्रुओं द्वारा पराजित नहीं हो सके हैं, अपूर्व मकरध्वज की तरह शोभायमान हैं ॥ ५ ॥ जिनका कार्य, अपने पराक्रम द्वारा पराभूत राजाओं के चक्र (समूह) द्वारा होता है, और जो न केवल नाम से चक्रिका भंजन हैं वरन् वास्तव में भी चक्रिका भंजन (अर्थात् जन्म और मरण के चक्र के नाशक[1]) हैं ॥ ६ ॥ जो अनेक ज्ञान सरिताओं के अधिष्ठाता

१ भविष्य की अपेक्षा से ।

यो विद्यानद्यधिष्ठानो मर्यादावज्रवेदिकः । रत्नगर्भो यथाख्यातचारित्रजलधिर्महान् ॥ ७ ॥
विध्वस्तैकान्तपक्षस्य स्याद्वादन्यायवादिनः[1] । देवस्य नृपतुङ्गस्य वर्धतां तस्य शासनम् ॥ ८ ॥

गणितशास्त्रप्रशंसा

लौकिके वैदिके वापि[2] तथा सामायिकेऽपि[3] यः । व्यापारस्तत्र सर्वत्र संख्यानमुपयुज्यते ॥ ९ ॥
कामतन्त्रेऽर्थशास्त्रे च गान्धर्वे नाटकेऽपि वा । सूपशास्त्रे तथा वैद्ये वास्तुविद्यादिवस्तुषु ॥१०॥
छन्दोऽलङ्कारकाव्येषु तर्कव्याकरणादिषु । कलागुणेषु सर्वेषु प्रस्तुतं गणितं परम्[5] ॥११॥
सूर्यादिग्रहचारेषु ग्रहणे ग्रहसंयुतौ । त्रिप्रश्ने चन्द्रवृत्तौ च सर्वत्राङ्गीकृतं हि तत् ॥१२॥
द्वीपसागरशैलानां संख्याव्यासपरिक्षिपः । भवनव्यन्तरज्योतिर्लोककल्पाधिवासिनाम् ॥१३॥

१ P वेदिनः । २ M स्यात् ; D चापि । ३ B च । ४ KM महा° । ५ MB दण्डा° । ६ MB पुरा । ७ MM° क्षिपाः ।

होकर सच्चरित्रता की वज्रमयी मर्यादा वाले हैं और जो जैन-धर्म रूपी रत्न को हृदय में रखते हैं, इसलिये वे यथाख्यात चारित्र के महान् सागर के समान सुप्रसिद्ध हुए हैं ॥ ७ ॥ एकान्त पक्ष को नष्ट कर जो स्याद्वादरूपी न्यायशास्त्र के वादी हुए हैं ऐसे महाराज नृपतुंग का शासन फले-फूले ॥ ८ ॥

गणितशास्त्रप्रशंसा

सांसारिक, वैदिक तथा धार्मिक आदि सब कार्यों में गणित उपयोगी है ॥ ९ ॥ कामशास्त्र में, अर्थशास्त्र में, संगीत व नाट्यशास्त्र में, पाकशास्त्र (सूपशास्त्र) में और इसी तरह औषधि-शास्त्र में तथा वास्तु-विद्या (निर्माण-कला) में, छन्द, अलंकार, काव्य, तर्क, व्याकरण आदि इन सभी कलाओं में गणना का विज्ञान श्रेष्ठ माना जाता है ॥१०–११॥ सूर्य तथा अन्य ग्रह-नक्षत्रों की गति के संबंध में ग्रहण और ग्रह-संयुति (संयोग) के सम्बन्ध में, त्रिप्रश्न के विषय में और चन्द्रमा की गति के विषय में—सर्वत्र इसे उपयोग में लाते हैं ॥१२॥ द्वीपों, समुद्रों और पर्वतों की संख्या, व्यास और परिमिति; भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिर्लोकवासी, कल्पवासी देवों के तथा नारकी जीवों के श्रेणिबद्ध और इंद्रक

(८) 'स्यात्' शब्द निपात है जो एकान्त का निराकरण करके अनेकान्त का प्रतिपादन करता है। यह शब्द 'कथंचित्' का पर्यायवाची है और एक निश्चित अपेक्षा को निरूपित करता है। इस प्रकार, वैज्ञानिक एवं युक्तियुक्त स्याद्वाद जो जैन-दर्शन एवं तत्त्वज्ञान की नींव है, वस्तु के यथार्थ स्वरूप को प्रकट करने के हेतु उसके अनन्त धर्मों में से एक समय में एक धर्म का प्रतिपादन करता है। प्रत्येक धर्म का वर्णन उसके प्रतिपक्षी विरोधी धर्म की अपेक्षा से सप्तभंगी में किया जाता है। उदाहरणार्थ—अस्तित्व एक धर्म है, और नास्तित्व उसका प्रतिपक्षी धर्म है। अपने प्रतिपक्षी सापेक्ष अस्तित्व धर्म की अपेक्षा से सप्तभंगी इस प्रकार बनेगी—(१) घट कथंचित् है, (२) घट कथंचित् नहीं है, (३) घट कथंचित् है और नहीं है, (४) घट कथंचित् अवक्तव्य है, (५) घट कथंचित् है और अवक्तव्य है, (६) घट कथंचित् नहीं है और अवक्तव्य है, (७) घट कथंचित् है, नहीं है, और अवक्तव्य है।

(१२) त्रिप्रश्न संस्कृत के ज्योतिर्लोक विज्ञान विषयक ग्रन्थों में वर्णित एक अध्याय का नाम है जो तीन प्रश्नों के विषय में प्रतिपादन करने के कारण इस नाम से प्रसिद्ध है।

ये प्रश्न ग्रहादि ज्योतिष बिम्बों के सम्बन्ध में दिक् (दिशा), देश (स्थिति) एवं काल (समय) विषयक होते हैं।

सम्यक् ध्यान शतक

- मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

साधक को लाभ

एकाशन उपवास हो, हल्केपन सह ध्यान।
ना प्रमाद निद्रा जगे, मुनि अनुभूति सुजान।।

*

स्पर्शन, रसना रहीं, काम इन्द्रियाँ जान।
कामजयी के ऊर्ध्व में, वहे ऊर्जा मान।।

सुयोग्य अवस्थायें

ममत्व तन का त्याग हो, कायोत्सर्ग महान।
आवर्त नमन साथ हो, निषद्या सह सु–ध्यान।।

*

नेत्र खुले ना बंद हों, नाशा दृष्टि सुहाय।
अधो दाँत फिर ऊर्ध्व की, पंक्ति सुसौम्य कहाय।।

*

सर्व अक्ष व्यापार को, विराम योगी देत।
धीरे–धीरे श्वास ले, ध्यान एक कर लेत।।

*

नहीं दृष्टि हो चंचला, आसन विजयी पूर्ण।
भौतिक साधन दूर सब, प्रकृति साथ सम्पूर्ण।।

ध्येय व साधन द्रव्य

शुद्ध आत्मा ध्येय है, परमेष्ठी, नव देव।
निमित्त द्रव्य व तत्त्व भी, अस्तिकाय सदैव।।

ध्यान हेतु क्षेत्र

ध्यान क्षेत्र एकान्त हो, बाधाओं से दूर।
जंगल, गृह, मंदिर रहे, प्रसन्नता से पूर।।

क्रमशः ....

प्रत्येक आत्मा में भगवान बनने की शक्ति : आचार्य विद्यासागर

संकलन : सुनील वेजीटेरियन

दीपक अनेक होते किंतु सबका प्रकाश एक होता है। ऊपर से देखने पर रंग, बिरंगे अनेक बल्ब होते हैं किन्तु नीचे सबका प्रकाश एक सा होता है संसार में अनेक हैं इसलिए संघर्ष चलता है किंतु एक में कभी संघर्ष नहीं चलता। सुख, शांति और आनंद पाने के लिए एक बनकर रहो। एकता हो तो दृष्टि में समता और विवेक रहता है। यदि दृष्टि में सभी एक हों तो सुख, शांति और आनंद हर जगह उपलब्ध है। मानव सुख, शान्ति से वंचित रहता है क्योंकि वह स्वयं को नहीं पहचान पाता। प्रत्येक आत्मा में भगवान बनने की शक्ति है यही बात समवशरण में सिखाई जाती है।

उपरोक्त उद्‌गार आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने अपने रविवारीय प्रवचनों में एम.एल.बी. स्कूल मैदान, दमोह में अभिव्यक्त किए। भक्तों की भारी भीड़ से भरे मैदान में धर्म सभा में आरम्भ में सतना गजरथ समिति के सदस्यों ने आचार्य ज्ञानसागर जी की फोटो के समक्ष ज्ञान ज्योति का प्रज्जवलन किया।

आचार्य श्री ने अपने मंगल प्रवचनों में आगे कहा कि विद्युत का कभी संग्रह नहीं किया जाता उसे सदैव वितरित किया जाता है जो प्रभु बनता है वह कोई भी वस्तु अपने पास नहीं रखता। दुनिया की कोई भी वस्तु ज्ञानी को आकर्षित नहीं कर सकती। मात्र प्रभु ही उसे आकर्षित करते हैं। बड़े बाबा के प्रथम चरण पूर्ण करने में देश की जनता ने जो सहयोग दिया वह सराहनीय है। बड़े बाबा हजारों वर्षों तक के लिए धूप, हवा और वर्षा से सुरक्षित हमेशा के लिए विराज गये हैं। बड़े बाबा के यहाँ ताले का काम नहीं है। ऐसी मास्टर चाबी लगा दी गई जिसे निकालने की हिम्मत किसी की नहीं। दमोह के लिए दमोह शब्द विशेष मोह की तरफ इंगित करता है। अब द बैस्ट कार्य करके दिखाना है। उन्होंने कहा कि जो कस्तूरी सूँघता है वह ऊँघता नहीं। एक बार आत्मा में आनंद आने लगे तो बाहर के सभी सुख उसके आगे फीके पड़ जाते हैं। जैसे प्रकाश का स्वरूप है वैसा आत्मा का स्वभाव है। जड़ वस्तु की तुलना आत्मा से कभी नहीं की जा सकती। आत्मा अतुलनीय है बाकी संसार की वस्तुएँ तुलने वाली हैं आत्मा की अनुभूति होती है तो बताए बिना रहा नहीं जा सकता। आत्मा अनंत होती हैं फिर भी वे अतुलनीय हैं गुणों की उपासना करना, किसी जाति, कुल, सम्प्रदाय से मुक्त मात्र गुणों का उपासक जैन धर्म है। आत्मा का स्वभाव उच्च वीतरागी भावों के साथ प्रभु की भक्ति में लीन होना ही जैन धर्म का केन्द्र बिन्दु है। आत्मा के आनंद की अनुभूति हर कोई नहीं कर सकता, जिस तरह विमान में बैठने की अनुभूति उसी को होती है, जो धरती की पकड़ से ऊपर अंतरिक्ष में हो जाता है। उसकी अनुभूति धरती वाला नहीं कर सकता। प्रवचन सभा में संतोष सिंघई, विमल लहरी, पंदमचंदजैन, राकेश सिंघई, अभय बनगांव, रूपचंद संगम, अरविन्द इटोरिया, नवीन निराला, श्रेयांश लहरी, सुनील वेजीटेरियन, गिरीश अहिंसा, संजीव शाकाहारी, विजय मलैया, मानव बजाज, राजेश चुनौती, सुनील बजाज, आदि उपस्थित रहे।

21 वीं शताब्दी का धर्म जैन धर्म

मुज़फ़्फ़र हुसैन, मुम्बई

समय किसी भी धर्म को अपनी मर्यादा में नहीं बांध सकता। कोई भी सदी किसी विशेष धर्म की नहीं होती है। लेकिन आने वाले समय की कल्पना कोई करता है तो उसे मौजूदा परिस्थितियों पर विचार करना पड़ता है। 21 वीं शताब्दी तकनीक की शताब्दी है। इसलिये हर कोई प्रकृति की ओर से मिलने वाली वस्तुओं का उपयोग बड़े पैमाने पर करना चाहता है। 21 वीं शताब्दी में जब नैसर्गिक वस्तुओं की कमी होगी और आदमी हाथ पांव मारने लगेगा उस समय उसे महसूस होगा कि अपने काम की वस्तुओं को वह सरलता से किस प्रकार जुटाए? समय का भी अपना धर्म है इसलिये यदि धर्म का समय भी हमारे जीवन में आ जाए तो हमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए। समय के साथ सत्ता के रूप बदले जिसे प्राप्त करने के लिये हथियारों की आवश्यकता पड़ी और हम आज देखते हैं कि इतने विविध प्रकार के हथियार बाजार में आ गए हैं जिसके बलबूते पर मनुष्य को सोचना पड़ता है कि धर्म इस समस्या से हमें किस प्रकार छुटकारा दिलाएगा? जब संगठित मानव जाति किसी धर्म को अपना लेती है तब हम देखते हैं कि धर्म दो भागों में बट जाता है। एक तो कर्मकांड और दूसरा उसका दर्शन। दुनिया के सभी धर्मों में यह दोनों बातें देखने को मिलती हैं। हम यहां कर्मकांड के रूप में नहीं बल्कि दर्शन के आधार पर यह कहना चाहेंगे कि 21 वीं शताब्दी का धर्म जैन धर्म होगा। इसकी कल्पना किसी सामान्य आदमी ने नहीं की है बल्कि बर्नाड शा ने कहा कि यदि मेरा दूसरा जन्म हो तो मैं जैन धर्म में पैदा होना चाहता हूँ। उक्त बात शा ने गांधी जी के पुत्र देवदास गांधी से कही थी। रेवेरेंड तो यहां तक कहते हैं कि दुनिया का पहला मज़हब जैन था और अंतिम मज़हब भी जैन होगा। बार्ल्ट यू एस एस के दार्शनिक डाक्टर मोराइस का तो यहां तक कहना है कि यदि जैन धर्म को दुनिया ने अपनाया होता तो यह दुनिया बड़ी खूबसूरत होती। जस्टिस रानडे ने कहा कि ऋषभदेव, नेमीनाथ, पार्श्वनाथ और भगवान महावीर यह चार, तीर्थंकर नहीं बल्कि जीवन और चिंतन की चार दिशाएं हैं।

ऐसा जैन धर्म में क्या है ? जैन, धर्म नहीं जीने का दर्शन है। सरल भाषा में कहूँ तो यह खुला विश्वविद्यालय (ओपन युनिवर्सिटी) है। आप को जीवन का जो पहलू चाहिये वह यहां मिल जाएगा। दर्शन ही नहीं बल्कि संस्कृति, कला, संगीत एवं भाषा का यह संगम है। जैन तीर्थंकरों ने संस्कृत को न अपना कर पाली और प्राकृत को अपनाया। क्योंकि वे जैन दर्शन को विद्वानों तक सीमित नहीं रखना चाहते थे बल्कि वह तो सामान्य आदमी तक पहुंचे और उसके जीवन का कल्याण करें।

दुनिया के सभी धर्मो ने अपने चिन्ह तय किये इस में कुछ हथियारों के रूप में तो कुछ आकाश में चमकने वाले चांद और सूरज के रूप में। 24 तीर्थंकरों में एक भी ऐसा नहीं दिखलाई

पड़ता जिसके पास धनुष बाण हो या गदा अथवा त्रिशूल। हथियारों से लैस दुनिया के राजा अपनी शानो शोकत से अपना दबदबा बनाए रखने में अपनी महानता समझते थे लेकिन यहाँ तो ईश्वर के बनाए हुए भोले पशु पक्षी अथवा तो जलचर प्राणी उन के साथ हैं। उनका कहना था कि हम साथ-साथ जियेंगे और इस दुनिया को हथियार रहित बनाएंगे। इंसान की सुविधा के लिये घोड़े, हाथी, गरुड़, मोर और न जाने किन किन को अपनी सवारी बना ली। लेकिन जैन तीर्थंकर तो किसी को कष्ट नहीं देना चाहते हैं वे अपने पांव के बल पर सारी दुनिया को उलांगते हैं और प्रकृति के भेद जानने की कोशिश करते हैं। रहने को घर नहीं, खाने को कोई स्थायी व्यवस्था नहीं लेकिन दुनिया के कष्टों का निवारण करने के लिये अपनी साधना में कोई कमी नहीं आने देते।

दुनिया में असंख्य वाद हैं जो भिन्न भिन्न विचारधारा पर अपना चिंतन करते हैं। वे विचार से समाज बनाते हैं। लेकिन जैन धर्म समाज को व्यक्ति में देखता है। हर वाद ने व्यक्ति को छोटा कर दिया है। लेकिन हम देखते हैं कि जैन विचार ने मनुष्य को सब से महान बना दिया है। किसी भी हालत में वह व्यक्ति के गुण और उसके सामर्थ्य को समाप्त नहीं होने देता। दुनिया के अन्य धर्म मनुष्य को सामाजिक प्राणी बना कर उसे जीवन यापन करने के लिये लाचार बना देते हैं, लेकिन यहाँ तो मनुष्य की अपनी स्वतंत्रता सर्वोपरि है। वास्तव में तो यही स्थिति उसे अहं ब्रह्मास्मि की ऊँचाईयों तक पहुँचाती है। आदमी से समाज बने तो क्या बड़ी बात। इंसान को वह भगवान ही नहीं बल्कि इस समस्त दुनिया का रचयिता बनाने की बात करता है। इंसान का बनाया कम्प्यूटर अपग्रेड बन सकता है तो फिर इंसान क्यों नहीं? चाँद सितारों को छूने वाला इंसान जब भगवान बन जाएगा तो फिर क्या समय अपनी सीमा में उसे बाँध सकेगा। वह 21 वीं शताब्दी का नहीं बल्कि इस अजर और अमर दुनिया का वह प्रणेता बन जाएगा।

लेकिन 21 वीं शताब्दी जो उसके लिये चुनौती भरी है वहाँ तो हिंसा का नंगा नाच हो रहा है। फिर वह महा मानव कैसे बनेगा। जैनदर्शन में अहिंसा को पराजित करने में तीन अ का महत्व हैं। ये है अहिंसा, अनेकांतवाद और अपरिग्रह। तीनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वे अलग नहीं हो सकते। लोगों ने युद्ध करके हिंसा फैलाई लेकिन क्या उन्हें विजय श्री मिल सकी। चंद्रगुप्त, अशोक और हर्षवर्धन उस खून खराबे को नहीं देख सके। इसलिये तो फिर उन्होने कसम खाई कि वे अब युद्ध नहीं करेंगे। रावण से युद्ध कराने वाले राम ने कहा अब अयुद्ध चाहिये और अयोध्या बसा लिया। एक क्षत्रीय कहता है अब वध नहीं होगा तभी तो उस का साम्राज्य अवध के नाम से प्रसिद्ध हो गया। हर लड़ाई के बाद इंसान शांति की तलाश में चलने को मजबूर हो गया। पहला महायुद्ध समाप्त हुआ तो ईसा के मानने वालों ने लीग ऑफ नेशन बनाई। लेकिन फिर भी द्वितीय महायुद्ध की ज्वाला भड़की तो राष्ट्र संघ बन गया। हर युद्ध के बाद अयुद्ध और हर हिंसा के बाद अहिंसा यह इंसान की खोज रही।

एटम बम डालने वाला जनरल एशायर को जब पता लगा कि उसने हीरोशीमा और नागासाकी में क्या किया तब उसे भारत की याद आई और अपनी मां से कहने लगा मुझे कोई श्वेत वस्त्रधारी महाराज के पास ले चल मुझे वहाँ शांति मिलेगी। क्योंकि उसने पढ़ा था कि भारत को न जीत सकने वाला सिंकदर जब एथेंस लौट रहा था तो उसे एक जैन साधु ने कहा था दुनिया को जीतने वाले काश तुम अपने आप को जीत सकते। जैन साधु सिंकदर के साथ गये थे। जैन साधु सिकंदर के बाद भी एथैंस में वर्षों तक लोगों को अहिंसा का संदेश देता रहा। एथेंस में सब कुछ बदल गया है लेकिन आज भी वहाँ उन जैन साधु की प्रतिमा लगी हुई है। भगवान पार्श्वनाथ की एक प्रिय शिष्या वहाँ पहुँची थी। प्लेटो और एरिस्टौटल का एथेंस इतना प्रभावित हुआ कि पायथोगोरस जैसा महान गणितज्ञ यह कहने लगा कि मैं जैन हो गया हूँ। 21 वीं शताब्दी पानी के संकट की शताब्दी बनने वाली है। जैन मुनि तो कम पानी पीकर अपना काम चला लेते हैं लेकिन हम जैसे लोग क्या करेंगे ? उसका मूल मंत्र है शाकाहार। शांति, कांति, हार्द और रक्षा को परिभाषित करता है यह शब्द। मांसाहार के लिये हाइब्रिड बकरे, डुक्कर और मुर्गियां पैदा की जा रही हैं। इन कृत्रिम पशुओं पर अध्ययन करें तो एक बकरी का बच्चा यदि एक किलो है तो उसे दो किलो बनाने में 5000 गैलन पानी लगता है। लेकिन एक किलो टमाटर पैदा करने में केवल 160 लीटर पानी। उस संकट के समय आप क्या करेंगे?

भूकम्प, ज्वालामुखी और सुनामी अब हमारा भाग्य बन गए हैं। जानवरों के कत्ल के कारण यह विपदाएं आती हैं यदि विश्वास न आए तो बीसोलोजी का अध्ययन जरूर करिये। इस संकट को उबारने वाला धर्म ही केवल 21 वीं शताब्दी का धर्म बन सकता है।

6 अरब की यह दुनिया कहाँ जा कर रूकेगी? साधन और स्रोत कम होंगे तो फिर टकराव अवश्य होगा। क्या ब्रह्मचर्य इसका उपाय नहीं है। मोक्ष चाहते हो तो मौत और जीवन के चक्कर से निकलो। स्वयं ऐसा करना चाहते हो तो फिर दूसरों को जन्म दे कर उनके सर पर पाप की गठरी क्यों रखना चाहते हो?

21 वीं शताब्दी में जिस नारी स्वतंत्रता की बात की जाती है। जैन धर्म में झाँक कर देखों तो जैन साध्वियों को कितना बड़ा सम्मान मिला है। वे पूजनीय हैं। धर्म को पढ़ाती और सिखलाती हैं। ईसाईयों ने मरियम की बेटियों के साथ क्या किया? तलाक तलाक और तलाक यह शब्द कानों को फाड़ देते हैं। दासी और भोगिनी को साध्वी बना देने का चमत्कार केवल जैन धर्म ने किया है। समानता और स्वतंत्रता के साथ उनका स्वाभिमान स्थापित किया है।

20 वीं सदी ने अणु को तोड़ा परमाणु ने चमत्कार किया। उससे ऊर्जा का पुंज एटम बम तैयार हो गया। जैन धर्म का भेद-विज्ञान आत्मा और शरीर को अलग कर देने वाला बहुत पुराना

विज्ञान है। आत्मा ही तो एटम है और समस्त दुनिया में शक्ति का संचार करती है।

भारतीय दर्शन में वसुदेव कुटुम्ब की कल्पना की गई है जिस का आधार सह अस्तित्व है। इसे सम धर्म सम भाव की भी संज्ञा दी जाती है। लेकिन आज तक तो यह शब्दावली केवल राजनीति के दायरे में ही प्रस्तुत की गई है। यदि आप अध्यात्म के आधार पर इसका विचार करते हैं तो फिर आप को जैन दर्शन की और लौटना पड़ेगा। नागरिकता और राष्ट्रीयता इन दिनों हर देश के मानव का आधार है। लेकिन जब तक समानता और स्वतंत्रता नहीं मिलती यह शब्द खोखले मालूम पड़ते हैं। मनुष्य के कष्टों का निवारण और अंतराष्ट्रीय आधार पर उस का उद्धार केवल और केवल (अनेकान्तमयी) जैन दर्शन के माध्यम से ही सम्भव है।

प्रेषितकर्ता : सुनील वेजीटेरियन, प्रचार मंत्री कुण्डलपुर कमेटी दमोह (म.प्र.)

आजीविका कमाना मात्र नहीं आचरण सीखना भी है शिक्षा का उद्देश्य

आर्जवसागर महाराज

रेवाड़ी (व) : श्री दिगंबर जैन समाज के प्रमुख संत मुनि श्री 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी के परम शिष्य मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज ने कहा कि विद्यार्थी देश का भविष्य है और शिक्षक उनके जीवन का निर्माता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य मात्र आजीविका कमाना ही नहीं, अपितु आचरण सीखना भी है। वह जैन पब्लिक स्कूल में विद्यार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने विद्यार्थियों को शाकाहारी बनने, तंबाकू व नशीले पदार्थों का सेवन न करने तथा चमड़े का प्रयोग न करने का संकल्प भी दिलाया। जैन संत के विद्यालय में आगमन पर स्कूल के बैंड की धुन पर प्रबंधन समिति के सदस्यों ने उनकी अगवानी की। प्रबंधन समिति के प्रधान डी.के. जैन, प्रबंधक राजीव जैन, सचिव दीपक जैन, सलाहकार रमेश जैन, जयमाला जैन, मुख्याध्यापिका डॉ. इंदु यादव, अंकुर प्रभारी रेणुका जैन, जैन समाज के प्रधान अजित प्रसाद जैन, सचिव राजकुमार जैन, जैन एजुकेशन बोर्ड के प्रधान सुभाष जैन, सचिव डॉ. एस.सी. जैन आदि ने मुनि श्री के चरणों में श्रीफल भेंट किया। समिति के सचिव दीपक जैन ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। विद्यालय की बालिकाओं ने गुरु वंदना से मुनिश्री का अभिवादन किया। मुनिश्री ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये अनुशासन का पालन करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल आजीविका प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। अपितु इसके माध्यम से आचरण सीखकर हम सर्वोच्च पदों पर पहुंचें और देश की सेवा करें। अजेश जैन के संचालन में चले कार्यक्रम के अंत में मुख्याध्यापिका ने आभार व्यक्त किया तथा मुनिश्री ने समिति के सदस्यों को जैन साहित्य भेंटकर विद्यालय की उन्नति का आशीर्वाद दिया।

पंजाब केसरी, 20 अप्रैल, 10 दिल्ली

श्रुतपंचमी पर्व

संकलन : सुशीला पाटनी

प्रतिवर्ष ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन जैन समाज में श्रुतपंचमी पर्व मनाया जाता है। इस पर्व को मनाने के पीछे एक इतिहास है जो इस प्रकार है –

वीर निर्वाण संवत् 614 में आचार्य धरसेन काठियावाड़ स्थिर गिरिनगर (गिरनारपर्वत) की चन्द्रगुफा में रहते थे। जब वे बहुत वृद्ध हो गये और अपना जीवन अल्प जाना, तब श्रुत की रक्षार्थ उन्होंने महिमानगरी में एकत्रित मुनिसंघ के पास एक पत्र भेजा। तब मुनि संघ ने पत्र को पढ़कर दो मुनियों को गिरनार भेज दिया। वे मुनि विद्याग्रहण करने में तथा उनका स्मरण रखने में समर्थ थे। अत्यन्त विनयी, शीलवान् तथा समस्त कलाओं से पारङ्गत थे। जब वे दोनों मुनि गिरनार की ओर जा रहे थे तब श्री धरसेनाचार्य ने एक स्वप्न देखा कि दो श्वेत वृषभ आकर उन्हें विनयपूर्वक वन्दना कर रहे हैं। उस स्वप्न से उन्होंने जान लिया कि आने वाले दो मुनि विनयवान् एवं धर्मधुरा को वहन करने में समर्थ हैं। तब उनके मुख से अनायास ही ''जयदु सुय देवदा'' ऐसे आशीर्वादात्मक वचन निकल पड़े ।

दूसरे दिन दोनों मुनियों ने आकर सर्वप्रथम विनयपूर्वक आचार्य चरणों की वन्दना की। दो दिन तक श्री धरसेनाचार्य ने उनकी परीक्षा की। दोनों मुनियों की योग्यता को गुरु ने जान लिया कि सिद्धान्त का अध्ययन करने के लिए ये योग्य पात्र हैं। तब आचार्य श्री ने उन्हें सिद्धान्त का अध्ययन कराया। वह अध्ययन आषाढ़ शुक्ला एकादशी को पूर्ण हुआ। उस दिन देवों ने उन दोनों मुनियों की पूजा की। एक मुनिराज के दाँतों की विषता को दूर कर उनके दाँत कुन्दपुष्प के समान सुन्दर करके उनका पुष्पदंत नामकरण किया। और दूसरे मुनिराज की भी भूत जाति के देवों ने सूर्यनाद-जयघोष-गन्धमाला धूप आदि से पूजा कर भूतबलि नाम घोषित किया।

कुछ दिन बाद ही धरसेनाचार्य ने अपनी मृत्यु का समय निकट जानकर शीघ्र ही योग्य उपदेश देकर दोनों मुनियों को कुरीश्वर नगर की ओर विहार करा दिया। तब भूतबलि और पुष्पदन्त मुनि ने अंकलेश्वर (गुजरात) में आकर वर्षाकाल (चातुर्मास) किया। वर्षाकाल बीतते ही पुष्पदन्त आचार्य तो वनवास देश और भूतबलि द्रविड़ देश को विहार कर गये। पुष्पदन्त मुनिराज महाकर्म प्रकृति प्राभृत का छह खण्डों में उपसंहार कराना चाहते थे। अतः उन्होंने बीस अधिकार गर्भित सत्प्ररूपणा सूत्र को बनाकर शिष्यों को पढ़ाया और भूतबलि मुनि का अभिप्राय जानने के लिये जिनपालित को यह ग्रन्थ देकर उनके पास भेज दिया।

आचार्य पुष्पदन्त एवं भूतबलि ने 6 हजार श्लोक प्रमाण 6 खण्ड बनाये :-

1. जीवस्थान 2. क्षुद्रकबन्ध 3. बन्धस्वामित्व 4. वेदनाखण्ड 5. वर्गणाखण्ड 6. महाबन्ध

भूतबलि आचार्य ने इस षट्खण्डागम सूत्रों को ग्रन्थ रूप में बद्ध किया और ज्येष्ठ सुदी पंचमी के दिन चतुर्विध संघ सहित कृतिकर्मपूर्वक महापूजा की। उसी दिन से यह पंचमी श्रुतपंचमी नाम से प्रसिद्ध हो गयी। तब से लेकर लोग श्रुतपंचमी के दिन श्रुत की पूजा करते आ रहे हैं। आचार्य भूतबलि ने जिनपालित को षट्खण्डागम ग्रन्थ देकर आचार्य पुष्पदन्त के पास भेजा। वे अपने चिन्तित कार्य को पूर्ण हुआ देखकर और श्रुत के अनुराग से चतुर्विध संघ के मध्य जिनवाणी महापूजा कर अत्यन्त हर्षित हुए।

श्रुत और ज्ञान की आराधना का यह महान् पर्व हमें वीतरागी सन्तों की वाणी, आराधना और प्रभावना का सन्देश देता है। इस दिन श्री धवल, महाधवलादि ग्रन्थों को विराजमान कर महामहोत्सव के साथ उनकी पूजा करनी चाहिए। श्रुतपूजा के साथ सिद्धभक्ति और शान्तिभक्ति का भी इस दिन पाठ करना चाहिए। शास्त्रों की देखभाल, उनकी जिल्द आदि बनावाना, शास्त्र भण्डार की सफाई आदि करना, इस तरह शास्त्रों की विनय करना चाहिए।

अखिल भारत राष्ट्रीय जैन जन-चेतना मंच रात्रि विवाह निषेध कार्यक्रम योजना

आह्वान भी *अपील भी* *आवश्यकता भी*

- रीति रिवाजों एवं संस्कारों की एकरूपता, साथ ही सामाजिक जन-चेतना का विकास-आपसी एकता एवं मैत्री-भाव बना रहे। हम सभी अपनी धार्मिक - जिन अस्मिता की पहचान बनाए रखें, अक्षुण्ण रखें। साथ ही अहिंसक जीवन-शैली अपनाएँ तथा दिन में ही रुचि-भोज को कर्त्तव्य रूप से प्रमुखता दें। अपनाएँ- अन्य जनों को भी प्रेरित करें।
- समाज के हर जागरुक एवं चिन्तशील धर्म-प्रेमी बंधु-बांधव-जनों से साग्रह विनम्र अपील। अपने यहाँ होने वाले विवाहादि एवं अन्य मांगलिक शुभावसर पर स्व-रुचि भोज एवं अन्य जीवन संबंधी आतिथ्य समारोह-भोजन कार्यक्रम दिन में ही सम्पन्न करें।

धार्मिक-संस्कार से गृह शोभा लक्ष्मी का जब-जब होगा प्रवेश।
सुख-सुविधा-समता बरसेगी, जन-जीवन में कभी न होगा क्लेश ।।

1. स्वयं भी जियें और अन्य जीवों को भी जीने दें। 2. रात्रि-भोजन छोड़ें।
3. पशु-पक्षी भी रात्रि में भोज्य-सामग्री नहीं लेते फिर मनुष्य ही रात्रि भोजन क्यों करें।
4. रात्रि-भोज पाप-वर्धक, हिंसापरक और संस्कृति-विनाशक नहीं है तो क्या है?
5. जैनत्व की सुरक्षा और हम सभी के जीवन-अस्तित्व की सुरक्षा क्या रात्रि-विवाह और रात्रि भोज के द्वारा संभव है? विचार करें?
6. सूर्य की ज्योति और बिजली का प्रकाश - क्या दोनों में कोई फर्क नहीं है? जीव जल-जल कर किसके प्रकाश में मृत्यु का कलेवा बनते हैं? क्या दिवा-रात्रि दोनों में किया जाने वाला भोजन एक जैसा ही होता है? जीव-हिंसा किस प्रकाश में होती है। विचार करें?

प्रेरणा स्त्रोत : यशस्वी मुनि 108 श्री प्रमाणसागर जी महाराज।

निवेदक : डॉ. हेमचन्द जैन (संयोजक) अखिल भारत राष्ट्रीय जैन जन-चेतना, दिल्ली-110088

सीख दीजिए ताहि को, जाको सीख सुहाय

डॉ. वीरसागर जैन, नई दिल्ली

एक सूक्ति संसार की प्रायः सभी भाषाओं में यत्किंचित् परिवर्तन के साथ उपलब्ध होती है जिसका अभिप्राय है कि हमें अपात्र व्यक्ति को कभी कोई उपदेश/शिक्षा नहीं देना चाहिए, अन्यथा लाभ के बजाय हानि हो जाती है। हिन्दी भाषा के निम्नलिखित दोहे से तो प्रायः हम सभी परिचित हैं ही–

''सीख दीजिए ताहि को, जाको सीख सुहाय।
सीख न दीजे वानरा, घर चिड़िया को जाय ।।''

विश्व की प्राचीनतर भाषा प्राकृत में भी ठीक इसी अभिप्राय की दो गाथाएँ इस प्रकार उपलब्ध होती हैं –

''वाणर! पुरिसोसि तुमं णिरत्थयं वहसि बाहुदंडाइं।
जो पायवस्स सिहरेण करेसि कुंडिं पडालिं वा ।।
णविसि मयं मयहरिया, णविसि मयं सोहिया व णिद्धावा।
सुघरे अच्छसु विघरा जा वहसि लोगतत्तीसु ।।''

अर्थात् वर्षा काल में शीत से कम्पायमान एक वानर को देखकर बया पक्षी ने उससे कहा– ''हे वानर! पुरुष के समान हाथ–पैर वाले होकर भी तुम कोई कुटिया क्यों नहीं बना लेते? व्यर्थ ही क्यों ठिठुर रहे हो?'' बया से यह उपदेश सुनकर उस वानर को क्रोध उत्पन्न हुआ और उसने उस बया पक्षी के घोसले को तिनका–तिनका कर हवा में उछाल दिया। फिर बोला–''हे सुघरे! अब तू भी बिना घर के रह।''

सभी भाषाओं में इस प्रकार की सूक्ति मिलने से यह स्पष्ट होता है कि यह हमारे पूर्वजों का एक सार्वभौमिक और सार्वकालिक चिन्तन (सनातन सत्य) रहा है तथा इसके पीछे उनका एक गहरा सन्देश हमारे लिए छुपा हुआ है, जिसे हमें जीवन में सदैव याद रखना चाहिए।

हम अक्सर किसी को भी कुछ शिक्षा देने लग जाते हैं, मानो हम संसार के सबसे बड़े गुरु हैं। सामने वाला उस उपदेश के लिए सर्वथा योग्य है या नहीं – यह विचार करना तो दूर, जिन बातों का अभी हमें स्वयं ही पूर्ण ज्ञान नहीं हुआ है, अथवा जिनको अभी हम स्वयं ही अपने जीवन में ठीक से नहीं उतार पाये हैं, हम उनका भी दूसरों को तुरंत उपदेश देने लग जाते हैं। जबकि सर्वप्रथम अपने को सुधारने का ही सर्वशास्त्रों का स्पष्ट निर्देश है, जिसे किसी हिन्दी कवि ने बड़ी अच्छी तरह यूँ प्रकट किया है –

''अरे सुधारक जगत के, चिन्ता मत कर यार ।
तेरा मन ही जगत है, पहले इसे सुधार ।।''

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी अक्सर कहा करते थे कि जिस बात पर मैं स्वयं नहीं चलता, उसे दूसरे से भी नहीं कहता हूँ। यहाँ तक कि मैं तो बिना कुछ कहे ही शिक्षा देने को अधिक अच्छा

समझता हूँ- ''यह जीवन ही मेरा सन्देश है'' जीवन से दी गई शिक्षा वाणी से दी गई शिक्षा की अपेक्षा अधिक असरकारी होती है। किन्तु आज हमारी स्थिति उससे विपरीत ही हो रही है। हम स्वयं को सुधारे बिना दूसरों को सुधरने का उपदेश दे-देकर 'परोपदेशे पांडित्यम्' की उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं। उसमें भी वह उस बात के लिए पात्र हैं या नहीं, उसे हमारी बात पसन्द भी आ रही है या नहीं- इसका भी हम ध्यान नहीं रखते और बार-बार उसे अपना उपदेश दे-देकर उत्तेजित होने के लिए मजबूत कर देते हैं। आज यही घर-घर में कलह का एक बड़ा कारण बना हुआ है।

हमें कभी भी, किसी को भी, कुछ भी कहने से पहले भलीभाँति विचार कर लेना आवश्यक होता है कि सामने वाला उस शिक्षा के योग्य भी है या नहीं, उसे हमारी बात अच्छी भी लगेगी या नहीं, हमारी यह बात सचमुच उसके हित में है या नहीं, क्या इसी समय और इसी तरीके से कहना उचित है इत्यादि, अन्यथा मौन ही सर्वथा श्रेयस्कर होगा। वचन बोलना कोई आसान काम नहीं है। जिस प्रकार हमें गाड़ी चलाना आता हो और हमारे पास उसका वैधानिक अधिकार (लाइसेंस) हो, तभी हम गाड़ी लेकर सड़क पर आते हैं, अन्यथा भयंकर दुर्घटनाएँ होती हैं, उसी प्रकार इस जबान को चलाना भी भलीभाँति सीखना आवश्यक है, तभी कुछ ठीक से बोला जा सकता है, अन्यथा इससे इतिहास में अनेक दुर्घटनाएँ हुई हैं, आज भी होती रहती हैं और भविष्य में भी होती रहेंगी।

जिस प्रकार हम अपने पर्स का एक-एक रूपया सोच-समझकर उचित स्थान पर खर्च करते हैं, उसी प्रकार हमें अपने मुख से एक-एक शब्द बहुत सोच-समझकर उचित स्थान, समय एवं व्यक्ति के ही सामने निकालना चाहिए, कहीं भी, कभी भी, किसी के भी सामने नहीं। जिस प्रकार फल खट्टे और मीठे दोनों प्रकार के होते है, उसी प्रकार शब्द भी खट्टे और मीठे दोनों प्रकार के होते हैं और उनका वैसा ही कुप्रभाव और सुप्रभाव भी उनके श्रोता पर अवश्य पड़ता है। उदाहरणार्थ किसी को 'राम' या 'सीता' आदि शब्दों से सम्बोधित करके देखिए और किसी को 'रावण' या 'मंथरा' आदि शब्दों से सम्बोधित करके देखिए। अन्तर आपको स्वयं पता चल जाएगा। अतः जिस प्रकार हम खट्टे फलों को न लेकर मीठे फलों को ही चुनते हैं, उसी प्रकार कटु शब्दों को छोड़कर मधुर वचनों का ही प्रयोग करना उचित है।

सारांश यही है कि हमारी वाणी अत्यधिक मूल्यवान् होती है, हमें उसका मूल्य समझना चाहिए और उसका यद्वा-तद्वा दुरुपयोग न करके सदा सदुपयोग ही करना चाहिए।

''कोयल काको देते है, कागा काको लेय। मीठे वचन सुनाय के, जग अपनो कर लेय।।''
''ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को सीतल करें, आपहु सीतल होय ।।''
''बोली बड़ी अनमोल है, जो कोई बोले जानि। हिये तराजू तोलके, फिर मुख बाहिर आनि।।''
''तुलसी मीठे वचन से, सुख उपजत चहुँ ओर। वशीकरण इक मंत्र है, तजिए वचन कठोर।।''

वर्तमान के जैन गणितज्ञों के शिरोमणि प्रोफेसर लक्ष्मीचन्द्र जैन, जबलपुर, 'महावीराचार्य पुरस्कार' से पुरस्कृत

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज के सान्निध्य में, आचार्य शान्तिसागर पार्क, ऋषभ विहार, दिल्ली में, आधुनिकतम समसामयिक गणितज्ञ, भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, मनोविज्ञान के विशेषज्ञ, कर्मसिद्धान्त के तुलनात्मक अध्ययनकर्ता अनेक पुस्तकों के रचयिता, अनेक पुरस्कार प्राप्तकर्ता सिद्धहस्त सम्पादनकर्ता, यशस्वी लेखक, आदर्श शिक्षक, कुशल प्रवक्ता गुरुभक्त समादरणीय श्री **प्रो. (डॉ.) लक्ष्मीचन्द्र जैन कुन्द कुन्द भारती** द्वारा प्रवर्तित **'महावीराचार्य पुरस्कार'** से 22 अप्रैल 2010 वीरवार, वीर निर्वाण संवत् 2536 को पुरस्कृत किये गये। पुरस्कार के साथ ही आपको **'संख्यान शिरोमणि'** की मानद विरुद से भी विभूषित किया गया। आपको दिगम्बर जैन सभा, ऋषभ बिहार, दिल्ली द्वारा प्रदत्त एक लाख रुपयों की सम्मान राशि भी समर्पित की गई।

प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जी ने दुर्लभ गणित ग्रन्थ महावीराचार्य कृत 'गणितसार संग्रह' का हिन्दी में अनुवाद करने के कठिन श्रमसाध्य कार्य को रुचि के साथ किया एवं प्रस्तावना में सुस्पष्टता का सद्भाव कर विद्वानों को सुविधा प्रदान की है। इस सर्वप्रथम गणित विषयक महान ग्रन्थ 'गणितसार संग्रह' का अनुवाद कर जैन गणित जगत को उपकृत किया है। प्रो. लक्ष्मीचन्द्र शत्शत् बार साधुवाद के सुपात्र हैं। उन पर ऐसे शताधिक पुरस्कार न्यौछावर किये जा सकते हैं। आपके साथ ही आपके शिष्यवत मार्गदर्शित युवा विद्वान भाई अनुपम जैन, इन्दौर को कुन्दकुन्द भारती द्वारा ही प्रवर्तित 'आचार्य नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। आपको एक लाख रुपयों की सम्मान राशि एवं ''जैन गणित रत्नाकार'' की मानद उपाधि से भी विभूषित किया गया। विद्वानों के सम्मान से श्रुत के स्वाध्याय की प्रवृत्ति पुष्ट होती है। गवेषणाओं के नवीन द्वार खोलने के श्रम में सुरुचि का सद्भाव भी होता है। विद्वानों का सम्मान जैन सिद्धान्तों को अक्षुण्ण बनाये रखने का एक सशक्त व्यावहारिक सद्प्रयास है समाज के श्रीमान एवं संस्थाएँ साधुवाद की पात्र हैं जो ऐसे शुभ कार्य के प्रति रुचि रखते हैं। ऐसी ही कुन्द-कुन्द भारती, दिल्ली की कार्य शैली सराहनीय एवं अनुकरणीय है।

- श्रीपाल जैन 'दिवा' सम्पादक

जैन समाज के शास्त्रों को अंग्रेजी में अनुवादित करने के लिए

गणितज्ञ डॉ. एल.सी. जैन का सम्मान

महावीर स्वामी के निर्वाण गमन के 683 वर्ष बाद आचार्य धरसेन को श्रुत संरक्षण श्रुत लिपिबद्ध की भावना पैदा हुई थी। इन शास्त्रों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए आर्यिका मृदुमति माताजी ने कहा कि इन शास्त्रों को गणितज्ञ विद्वान डॉ. एल.सी. जैन ने अंग्रेजी में लिपिबद्ध करके विश्व के सामने जैन धर्म को प्रस्तुत किया है। इस कार्य पर डॉ. एल.सी. जैन को गोटेगांव समाज की और से सम्मान देने का निश्चय किया गया। उनकी अनुपस्थिति में यह सम्मान उनके पुत्र श्री चक्रेश जैन ने प्राप्त किया। यह सम्मान समाज की ओर से सुरेश चंद जैन, दिगम्बर जैन, कमल जैन की ओर से प्रदान किया गया।

महावीर जयंती व मुनि श्री १०८ आर्जवसागरजी महाराज के दीक्षा दिवस के शुभावसर पर धार्मिक पाठशालाओं का सम्मेलन सानंद सम्पन्न

पावन सानिध्य - आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्म प्रभावक शिष्य मुनि श्री आर्जवसागरजी महाराज एवं क्षुल्लक श्री हर्षितसागर जी महाराज

दिनांक 28 मार्च 2010 को भगवान महावीर की 2609 वीं जन्म जयन्ती व मुनि श्री आर्जवसागर जी के 22 वें दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में भोपाल, जयपुर, दमोह, अलवर एवं देहली इत्यादि अनेक स्थलों से करीब 500 लोगों ने पधारकर इस सम्मेलन में ज्ञानार्जन किया। इस सम्मेलन में पारितोषिक में प्रथम स्थान सांगानेर (धार्मिक पाठशाला) ने, द्वितीय स्थान अलवर (धार्मिक पाठशाला), ने एवं तृतीय स्थान तिजारा (धार्मिक पाठशाला) ने प्राप्त किया तथा सभी विद्यार्थियों को सांत्वना पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। विभिन्न पाठशलाओं के संरक्षकों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं तथा समाज के गणमान्य अतिथिगणों को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

इस मंगल कार्यक्रम की शुरूआत प्रातः 5.00 बजे प्रभात फेरी नगर परिभ्रमण के साथ की गई। प्रभात फेरी में सम्पूर्ण तिजारा नगरी महावीर भगवान के जयजयकारों से गूंज उठी। इसके बाद प्रातः 8.30 बजे परम पूज्य मुनिश्री का मंगल उद्‌बोधन हुआ। मुनि श्री ने भगवान महावीर के जन्म कल्याणक का इतना सजीव वर्णन किया कि सभी श्रोतागण भाव-विभोर हो गए। प्रातः 10.30 बजे तिजारा के इतिहास में प्रथम बार महावीर जयंती के शुभावसर पर मुनिश्री के सानिध्य में स्वर्ण रथयात्रा निकाली गई, जिसमें विभिन्न नगरों के हजारों लोगों ने भाग लिया। स्वर्णरथ में श्रीजी को लेकर बेठने का सौभाग्य श्री महेन्द्र कुमार जैन, जोबनेर वालों ने प्राप्त किया। रथयात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई वापिस देहरा क्षेत्र पर आई इसके पश्चात श्रीजी का अभिषेक मुनिश्री के आर्शीवचन के साथ सम्पन्न हुआ। दोपहर 1 से 2 बजे तक विभिन्न स्थानों की धार्मिक पाठशालाओं का सम्मलेन मुनिश्री के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

अपरान्ह् 2.30 बजे मंचीय कार्यक्रम में क्षेत्र के पदाधिकारियों श्री ज्ञानचंद जैन, श्री नरेन्द्र कुमार जैन व अन्य सदस्यों तथा बाहर से पधारे हुए डॉ. सुधीर जैन व श्री पवन जैन, भोपाल श्री देवकुमार जैन दिल्ली, श्री करणसिंह यादव, दिल्ली एवं अन्य अतिथिगणों द्वारा देवाधिदेव महावीर भगवान एवं आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चित्र का अनावरण दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। मुनिश्री के दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर मुनिश्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य डॉ. सी. देव

कुमार, दिल्ली वालों ने तथा शास्त्र भेट करने का सौभाग्य तिजारा धार्मिक पाठशाला की शिक्षिकाओं ने प्राप्त किया। इसके पश्चात स्थानीय व अन्य धार्मिक पाठशालाओं के विद्यार्थियों एवं शिक्षिकाओं द्वारा विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। आमंत्रित विद्वानों द्वारा भगवान महावीर पर उद्‌बोधन दिया गया। अलवर जैन समाज के अध्यक्ष श्री सुशील जी जैन एवं मुनिसंघ सेवा समिति के अध्यक्ष धर्मचंद जैन, एवं संरक्षक श्री बच्चू सिंह जैन व अशोक जी ठेकेदार सहित अन्य लोगों द्वारा मुनिश्री के चरणों में नारियल भेंट कर चातुर्मास के लिए निवेदन किया गया।

इसके पश्चात् परम पूज्य मुनि श्री ने भगवान महावीर के उपदेशों की चर्चा अपने मंगल प्रवचन में की। साय: काल 6.30 बजे गुरुभक्ति, भजन संख्या तथा श्रीजी एवं मुनिश्री की आरती की गई। 7.30 बजे मंचीय कार्यक्रम सभा में भगवान महावीर का पालना झुलाया गया तथा धार्मिक एकांकी व भक्ति नृत्य प्रस्तुत किए गए। सम्पूर्ण कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ. कमलेश जैन ने किया।

श्री दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्रीमान् बुधराज जी कासलीवाल, पांडीचेरी का अपूर्व योगदान

श्रीमान् बुधराज जी कासलीवाल पांडिचेरी प्रवासी, जन्म गगराना, जिला नागौर (राज.) धर्म प्रेमी हमेशा साधर्मी, गरीब लोगों के लिये सदा सहायक, समाज सेवी, मुनिभक्त श्री दिगम्बर जैन समाज, पांडिचेरी के अध्यक्ष पद पर सुशोभित हैं। श्री विशाखाचार्य तपो निलयम् (श्री 108 आर्जवसागर जी मुनि महाराज के आशीर्वाद से निर्मित) पौन्नूरमलै के संस्थापक ट्रस्टी हैं। वहाँ रहने वाले भव्यों की आहारादिक व्यवस्थाओं में भरपूर सहयोग करते-करवाते हैं।

आप अभी पांडिचेरी में ज्वैलरी एवं फायनेन्स व्यवसाय में रत हैं। आपके तीन पुत्र रत्न श्री प्रसन्न कुमार, रमेश कुमार एवं अजीत कुमार एवं तीन पुत्रियों सरोजा, अनिता व ललिता सभी विवाहित हैं। आपके तीन पौत्र एवं चार पौत्रियाँ हैं।

पांडिचेरी समाज में आपका योगदान सराहनीय एवं अतुल्य है। आप स्पष्ट वक्ता, सदा सेवा भावना रखने वाले व्यक्ति हैं। मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के कई चातुर्मास में आपने बहुत तन-मन-धन से सेवायें दी हैं जो प्रशंसनीय हैं।

प्रेषक : सुशील कुमार जैन गंगवाल

महावीराचार्य प्रणीत, गणितसार संग्रह के प्रो. लक्ष्मीचन्द्र जैन द्वारा किये गये अनुवाद की प्रति पाठकों को भाव विज्ञान पत्रिका उपलब्ध करा रही है। पाठक इसका लाभ लेकर इसका संग्रह भी कर सकते हैं।

हस्तिनापुर में जिनवाणी माता की पालकी यात्रा निकालकर श्रुत पंचमी पर्व मनाया

16 जून 2010 को हस्तिनापुर (मेरठ) में संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज, मुनिश्री 108 निर्वाणभूषणजी महाराज एवं क्षुल्लक 105 हर्षितसागरजी महाराज के सानिध्य में श्री दिगम्बर जैन प्राचीन बड़ा मंदिर जी में माँ जिनवाणी की आराधना कर श्रुत पंचमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

सर्वप्रथम मूलनायक भगवान शांतिनाथ का मंत्रोच्चारण के साथ जलाभिषेक कर त्रिमूर्ति में पहुँचकर शांतिधारा की गयी। तत्पश्चात् बैंड बाजों के साथ मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज व मुनि श्री निर्वाणभूषणजी महाराज संसघ को श्री कैलाश पर्वत से जैनागम षट्खण्डागम शास्त्र व मां जिनवाणी को पालकी में विराजमान करके उनकी शोभा यात्रा निकाली गयी। सर्वप्रथम श्री महेन्द्र कुमार जैन सर्राफ (सिसाने वाले) मेरठ ने चारों शास्त्रों की पालकी में विराजमान करने का सौभाग्य प्राप्त किया। पालकी उठाने का सौभाग्य श्री मिठ्ठनलाल जैन, पालम, दिल्ली, राजेन्द्र कुमार जैन, पटियाला, अजित प्रसाद जैन, दिल्ली, ताराचंद जैन, बड़ौत को प्राप्त हुआ। पालकी यात्रा मुख्य मंदिर से प्रारम्भ होकर मुख्य बाजार से होते हुए कैलाश पर्वत की परिक्रमा करा कर मुख्य वेदी पर समापन हुई। वहीं विराजमान मुनि श्री आर्जवसागरजी महाराज, मुनिश्री निर्वाणभूषणजी महाराज ने अपने प्रवचनों के माध्यम से आज के पावन दिन की महत्ता बतायी व अपना उद्‌बोधन दिया। मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ने मां जिनवाणी की महत्ता पर प्रकाश डाला उन्होंने बताया कि जिनवाणी माता व शास्त्रों के माध्यम से हम उन पंचपरमेष्ठी के स्वरूप को जानते हैं। ये शास्त्र ही हमारा मार्गदर्शन करते हैं। इस अवसर पर भोपाल से पधारे डॉ. अजित जैन तथा जोबनेर से डॉ. महेन्द्र जैन एवं श्री नवरतन द्वारा मुनिश्री को श्रीफल भेंट किया गया। मुनिश्री द्वारा रचित साहित्य का विमोचन श्री मिठ्ठनलाल जी (सपत्नीक) नई दिल्ली द्वारा किया एवं वे भावविज्ञान परिवार के पुण्यार्जक संरक्षक बने तथा तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से मंत्री श्री प्रद्युमन कुमार संरक्षक बने। गाजियाबाद से पधारे श्री गुनमत प्रसाद जैन, श्री विजय कुमार जैन, श्री ब्रज कुमार जैन ने ताँबे पर बने जैन बाईबिल कहे जाने वाले महान ग्रन्थ मोक्ष-शास्त्र, जिसका वजन लगभग 20 किलो, 40 पेज व 357 सूत्र अर्थ सहित अंकित है, जिसमें तीर्थ हस्तिनापुर का इतिहास अंकित है, ऐसे अनुपम व अद्‌भूत शास्त्र को मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज के सानिध्य में तीर्थ क्षेत्र के मंत्री व विधान संयोजक श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (पैनामा वाले), मेरठ को प्राचीन बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर हेतु भेंट स्वरूप दान दिया। तीर्थ क्षेत्र कमेटी की ओर से उनका सम्मान सहित आभार व्यक्त किया। क्षेत्र के मंत्री श्री प्रद्युम्न कुमार जैन (पैनामा वाले) मेरठ, श्री देवेन्द्र कुमार जैन सर्राफ, श्री शिखर चंद जैन मेरठ, श्री विजय कुमार जैन (बैंक वाले), श्री वेदप्रकाश जैन व अन्य पधारे हुए सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने गोला चढ़ाकर महाराज श्री के सम्मुख अपना चार्तुमास इसी पावन धरा पर करने का निवेदन किया।

मुकेश कुमार जैन (प्रबंधक), बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, एफ 108/34, शिवाजी नगर, भोपाल (म.प्र.) 462 016

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी

श्रीमती बबीता जैन
पति श्री देवेन्द्र कुमार जैन, छतरपुर

द्वितीय श्रेणी

शिवानी जैन
पिता श्री संजय जैन, पथरिया (दमोह)

तृतीय श्रेणी

श्रीमती पुष्पा जैन
पुत्री श्रीमती शीलरानी नायक, दुर्ग

उत्तर पुस्तिका - मार्च 2010

प्र. क्र. 1. तेरासी लाख पूर्व वर्ष 2. कालसंवर देव ने
3. ऋजुकूला नदी के तट पर, 4. भगवान महावीर
5. ना 6. ना 7. हाँ 8. हाँ
9. समन्तभद्राचार्य 10. रइधुकवि 11. आ. ज्ञानसागर जी
12. छटवे व बारहवे का लाल, सातवे व तेईसवे का हरा, आठवें व नौवें का सफेद, बीसवे व बाईसवे का नीला तथा शेष का स्वर्ण जैसा वर्ण था
13. गोम्मटसार 14. 23 15. 35
16. तीर्थोदय काव्य
17. सही (✔) 18. सही (✔) 19. गलत (×)
20. सही (✔)

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन **अंक 100**

❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❉ उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र. 1. तीर्थंकर आदिनाथ मुनीश्वर की प्रथम पारणा कहाँ पर हुई थी?
अयोध्या नगरी में [ ] हस्तिनापुर में [ ] पोदनपुर में [ ]

प्र. 2. सभी तीर्थंकरों का जन्म (हुण्डावसर्पिणी काल को छोड़कर) कहाँ पर होता है?
सम्मेदशिखरजी में [ ] वाराणसी में [ ] अयोध्या जी में [ ]

प्र. 3. भगवान रामचन्द्र जी कहाँ से मोक्ष गये?
मांगीतुंगी गिरी से [ ] गजपंथा गिरि से [ ] कुंथलगिरि से [ ]

प्र. 4. भगवान शान्तिनाथ जी, भ. कुन्थुनाथ जी और भ. अरनाथ जी के 4 कल्याणकों का स्थान है?
सम्मेदशिखर जी [ ] अयोध्या नगरी [ ] हस्तिनापुर जी [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5. जैन धर्म सापेक्षवाद युत है? [ ]

प्र. 6. आचार्यों के मत से चतुर्थ गुणस्थान में शुद्धोपयोग होता है? [ ]

प्र. 7. पञ्चम काल के अन्त तक तीन परमेष्ठी होते रहेगें ? [ ]

प्र. 8. अभेद विवक्षा से ध्यान चार प्रकार के होते हैं? [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9. छहढाला शास्त्र के रचयिता .... थे।
[पं. गोपालदास बरैया, श्री क्षु. गणेश प्रसाद वर्णी जी, पं. दौलतराम जी]

प्र.10. कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना .... ने की थी।
[मानतुंगाचार्य ने, रविषेणाचार्य ने, कुमुदचन्द्राचार्य ने]

प्र.11. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रन्थ के रचयिता थे ....।
[अमृतचन्द्राचार्य, पूज्यपादाचार्य, कुन्दकुन्दाचार्य]

कृपया यहाँ से निकालें

दो पक्तियों में उत्तर दीजिये –

प्र.12. श्रावक शब्द के तीन अक्षरों में मोक्ष मार्ग समझाइये।

....

....

सही जोड़ी मिलायें – (कोष्ठक में नम्बर डालकर या लाइन मिलाकर)

प्र.13. धर्म का मूल है	[ ]	अरिहंत	(1)
प्र.14. अष्टप्रातिहार्य सह होते हैं	[ ]	मुनि	(2)
प्र.15. महाव्रत होते हैं।	[ ]	दया	(3)
प्र.16. पण्डितमरण जिनका होता है वे हैं	[ ]	पांच	(4)

सही [✔] या [✕] गलत का चिन्ह बनाइये–

प्र.17. समवसरण की रचना सभी अरिहंतों के होती है [ ]

प्र.18. तीर्थंकर आदिनाथ का दीक्षा के छह माह बाद आहार हुआ। [ ]

प्र.19. मंगल द्रव्य आठ होते हैं। [ ]

प्र.20. एक संसारी आत्मा में कम से कम दो ज्ञान होते हैं। [ ]

कृपया यहाँ से निकालें

प्रतियोगी–परिचय

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता ....

....

मोबाईल/फोन नं. ....

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

दानवीर, किशनगढ़

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳✳

● श्री नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳✳ सम्मानीय संरक्षक ✳✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री संजय सोगानी, राँची ● श्री आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती संगीता बजाज ध.प. श्री हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली

✳ संरक्षक ✳

● श्री विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, पूर्व अध्यक्ष जैन समाज, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र प्राचीन बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री घनश्यामजी जैन, दिल्ली

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती

कोपरगाँव

श्री चंदूलाल दीपचंद काले
श्री पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री अशोक चंपालाल ठोले
श्री नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री अशोक पापड़ीवाल
श्री सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

गुना

श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

छतरपुर

श्री प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, लक्तपुरावाले
श्री देवेन्द्र डयोढ़िया
अध्यक्ष,चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई वाले
श्री अनुज कुमार जैन

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़ वाले
श्री राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा वाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री ओ.पी. सिंघई
श्रीमती मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा जैन ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री पदम पाटनी
श्री राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती शीला डोइया
श्रीमती शांतिदेवी सोध्या
श्री हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती साधना गोदिका

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छावड़ा)
श्री प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री पदमचंद सोनी
श्री भागचंद जी दोषी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद छावड़ा जैन
श्री भंवरलाल बिनाक्या
श्री धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायके
श्रीमती मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री राकेश कुमार रांका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन

नागौर

श्री प्रकाशचंद पहाड़िया, देह

अजमेर

श्री महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री रूपचंद छावड़ा
श्री सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती निर्मला प्रकाशचंद जी सोगानी
श्रीमती निर्मला सुशील कुमार जी पांडया
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री पूरनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री ज्ञानचंदजी गदिया
श्री निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला

कुचामनसिटी

श्री चिरंजीलाल पाटोदी
श्री सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री विनोद कुमार पहाड़िया
श्री लालचन्द पहाड़िया
श्री गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री सुरेश कुमार पांडया
श्री सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री संजय कुमार महावीर प्रसाद पांडया
श्री कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती चूकीदेवी झाँझरी
श्री अशोक कुमार बज
श्री संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री एस.के. बजाज
श्री प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन

मुम्बई

श्री एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री हर्ष कोछल्ल, बी.ई.

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री महावीर प्रसाद पाटोदी

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला

सागर

श्री मनोज कुमार जैन

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष,श्री 1008 पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री पारसमल कोठारी

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्रीमती राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

जिन्दगी ऐसे बनती है

❉ किसी को माफ कर देने पर पछताना और किसी को सजा देने पर इतराना नहीं चाहिए।

❉ कभी गुस्से या जल्दी में किसी को सजा नहीं देनी चाहिए। टाल देने का मौका हो तो टाल देना चाहिए।

❉ अच्छे कामों से अच्छा कोई कारोबार नहीं। पुण्य से अच्छी कोई इबादत नहीं। नम्रता से अच्छी कोई अच्छाई नहीं। शिक्षा से अच्छी कोई इज्जत नहीं।

❉ हर आदमी की कीमत वह हुनर, वह अच्छाई है, जो उसके अंदर है।

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी जैन धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला .... प्रदेश ....से **भाव विज्ञान पत्रिका** हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/- ☐ परम संरक्षक रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....

....

जिला .... प्रदेश ....

पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर .... मोबाईल ....

ई-मेल .... है।

क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ? (हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंदौर, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code STIN0003005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

कृपया यहाँ से निकालें

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य

मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।

☛ सत् साहित्य समीक्षा।

☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।

☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

सम्पर्क :

डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161

डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

श्री 1008 चन्द्रप्रभु भगवान, लन्दन

आदिपुरुष 1008 श्री आदिनाथ भगवान, दिल्ली

प्रस्तुति : डॉ. एस.पी. जैन, नई दिल्ली

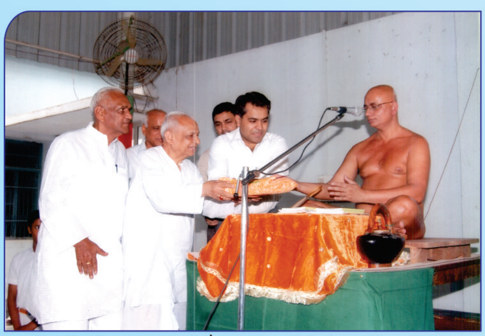

रेवाड़ी पब्लिक स्कूल में जैन स्कूल कमेटी के पदाधिकारीगण मुनिश्री को शास्त्र भेंट करते हुए।

जैन गर्ल्स स्कूल, रेवाड़ी में मुनिश्री से संकल्प लेती हुई कन्याएं

आर्यिकारत्न १०५ श्री मृदुमती माताजी ससंघ के सानिध्य में गोटेगांव समाज से प्रो. एल.सी. जैन का सम्मान लेते हुए श्री चक्रेश जैन, जबलपुर

प्रो. एल.सी. जैन, जबलपुर द्वारा रचित ग्रंथों को आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज को दिल्ली में प्रस्तुत करते हुए श्री श्रेयांस जैन, जबलपुर

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

श्रुतपंचमी पर्व महोत्सव, हस्तिनापुर

श्री शांतिनाथ भगवान के मोक्षकल्याणक दिवस पर स्वर्णरथोत्सव।

कैलाश पर्वत रचना के परिसर में शास्त्र पालकी।

मुनिश्री द्वारा रचित साहित्य का विमोचन एवं शास्त्र प्रदान करते हुए श्री मिट्ठनलाल जी, नई दिल्ली।

मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज प्रवचन देते हुए।

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर कमेटी, हस्तिनापुर की और से भावविज्ञान की सदस्यता ग्रहण करते हुये मंत्री श्री प्रद्युमन कुमार जी।

चातुर्मास का निवेदन करते हुये क्षेत्र के मंत्री श्री प्रद्युम्न कुमार, श्री देवेन्द्र कुमार सर्राफ, श्री शिखरचंद, मेरठ आदि।

पुण्यार्जक

सौजन्य से

ए. बुधराज जैन कासलीवाल

86, भारती स्ट्रीट, पांडीचेरी 650001

फोन : 2333537, 2923702, मोबा.: 94865 22220

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)